

पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय

25-फरवरी-2016 19:40 IST

रेल बजट 2016-2017 पर प्रधानमंत्री की टिप्पणी का मूल पाठ

प्रगतिशील राष्ट्र की गतिशील रेलवे के लिए एक विचारशील बजट प्रस्तुत करने के लिए, मैं रेलमंत्री सुरेश प्रभु को बहुत-बहुत बधाई देता हूँ।

इस बजट में गरीबों की गरिमा, महिलाओं का गौरव, युवाओं का उत्साह एवं मध्यम वर्ग की मुस्कान बढ़ाने का भरसक प्रयास किया गया है।

पिछले वर्ष के बजट में जो वादे किए गए थे, उसका पूरा-पूरा हिसाब देते हुए यह बजट, आगे की आशावान रणनीति बनाता है। इस दिशा में पिछले एक साल में काफी हद तक हमें सफलता मिली है, उसे और बेहतर बनाने का पूरा प्रयास इस बजट में प्रस्तुत किया गया है।

साफ-सफाई एवं यात्री सुविधा या Technology-Up gradation पिछले दो रेल बजटों का मूल मंत्र रहा है। साथ ही साथ रेलवे Projects को मात्र Completion से नहीं बल्कि commissioning से परिभाषित किया, मैं समझता हूँ कि ये नीतिगत बदलाव देश की अर्थ व्यवस्था में एक Paradigm shift है। गरीबों के लिए Super-fast train की विशेष व्यवस्था करते हुए अंत्योदय एक्सप्रेस एवं दीनदयालु रेल डब्बों की शुरुआत हमारी सरकार की गरीबों के प्रति प्रतिबद्धता स्पष्ट करती है।

रेलवे में IT सहित नई Technology, अधिक पूँजी निवेश एवं अमलीकरण को असरदार बनाते हुए यह रेल बजट देश की अर्थ व्यवस्था में दूरगामी सकारात्मक योगदान करेगा।

देश के पिछड़े क्षेत्रों में, खासकर उत्तर पूर्वी राज्यों में North-East में रेलवे Connectivity बढ़ाने का सरकार का वादा पूरा करने की दिशा में, उत्तम कदम उठाए गए हैं। साथ ही साथ, हमारे रेल मार्गों की ऐतिहासिक समस्या जोकि क्षमता-हीनता के कारण थी उसे पिछले एक साल में काफी हद तक दूर किया गया है। और इस दिशा में यह रेल बजट और भी पुख्ता इंतजाम करता है।

श्रीमान सुरेश प्रभु जी के पहले, जो बजट आए वो हमने देखे हैं। मैं उनकी आलोचना करना नहीं चाहता हूँ, लेकिन अगर मैं गत-सरकार के पाँच वर्ष के बजट को देखूँ, तो सुरेश प्रभु जी के बजट में ढाई गुना निवेश के साथ एक बहुत बड़ा jump लगाया गया है। ये बजट देश के नवनिर्माण में एक महत्वपूर्ण कड़ी होगा। सबसे अच्छी बात यह है कि हमारे रेलवे के विकास में राज्य सरकारें भी उत्साह से भाग लेने जा रही हैं। उसका विस्तृत road-map प्रस्तुत किया गया है। साथ ही यात्रियों एवं रेल कर्मचारियों का सहयोग लेने का प्रयास भी किया गया है। खर्च में अनुशासन, प्रबंधन में दक्षता एवं उपभोगता के प्रति जवाबदेही हमारी सरकार का focus है जिसे यह रेल बजट पूर्णरूप से दर्शाता है।

मैं फिर एक बार रेलमंत्री श्रीमान सुरेश प्रभु जी को बहुत-बहुत बधाई देता हूँ, रेलवे परिवार को बधाई देता हूँ, टीम रेलवे को बधाई देता हूँ।
बहुत-बहुत धन्यवाद!

एकेटी/एके/एसबीपी/

**Press Information Bureau
Government of India
Prime Minister's Office**

04-March-2016 17:48 IST

Text of PM's address at the launch of "Setu Bharatam" programme

उपस्थित सभी राज्यों से आये हुए प्रतिनिधि मंत्री परिषद के सदस्य, सांसदगण के प्रतिनिधि और सभी महानुभाव,

आमतौर पर सरकार एकाध भी bridge बनाती हैं तो एकाध रोड बनाती है तो हमारे देश में एक बहुत बड़ी घटना मानी जाती है। मीडिया का भी ध्यान रहता है और उस क्षेत्र के लोग भी उस विषय में ज्यादा चर्चा करते हैं क्योंकि वर्षों तक जिस चीज की मांग रहती है और बड़ी मुश्किल से 15-15 साल के इंतजार के बाद कुछ होता है, तो ये हम इन चीजों से अनुभव करते हैं। हमने एक comprehensive, integrative approach लिया है। हमें पता है कि भई ये समस्याएं हैं, तो उन समस्याओं को एक पूरी ताकत के साथ देश को समस्या से कैसे बाहर निकाला जाए। Normally सरकारें incremental काम करने की आदत रखती है, पहले पांच करते थे, अब सात करते हैं, सात करते थे दस करते हैं, हमारी कोशिश है quantum jump की, break-through की, पुरानी स्पीड और निर्णय करने की प्रक्रियाओं से एकदम से बाहर निकलना। गति बढ़ा देना, quick decision लेना उसमें से ही सारी योजनाएं साकार होती हैं।

सेतु भारतम्, अभी नितिन जी बता रहे थे आपको भी आश्चर्य होगा इतनी बड़ी सरकार उसको address मालूम नहीं है कि कौन सा bridge कहाँ है, यानी कैसे काम किए होंगे और मैं इसमें कोई elected body का दोष नहीं देता हूँ कि फलाने प्रधानमंत्री थे, या दिकरे राज्यमंत्री थे। मैं ये नहीं कह रहा हूँ। व्यवस्था का दोष है, हमने ये इन चीजों को प्राथमिकता नहीं दी। और इसलिए सबसे पहला काम किया कि भई एक बार देखो तो सही इस देश में क्या है कहाँ है, क्या स्थिति है। अब उसका gradation का काम चल रहा है कि उमर के हिसाब से bridge किस category में आते हैं, लंबाई-चौड़ाई के हिसाब से किस category में आते हैं, material के संदर्भ में, किस प्रकार की डिजाइन है, कितनी पुराने जमाने की डिजाइन हैं, नई ये सारा उसका gradation चल रहा है। और दूसरा उसका address पक्का हो रहा है longitude-latitude के माध्यम से, Space-Technology का उपयोग करके कहाँ यहाँ ये bridge है? हो सकता है कुछ जगह पर कागज पर bridge होगा वहाँ नहीं होगा वो भी हाथ में आएगा। लेकिन कोशिश ये है।

दूसरा छोटी-छोटी चीजें हैं लेकिन आप लोगों को हैरानी होगी कि हमारे यहाँ पहले highways बनते थे जमीन तो acquire करते थे। लेकिन जब highway बनता था, तो जमीन के बगल में encroachment हो जाता था और कभी four-lane करना है, six-lane करना है, तो आप चौड़ाई नहीं बढ़ा सकते हैं। क्योंकि ये encroachment था। Encroachment, अब आ नहीं सकते क्योंकि हर दूसरे साल चुनाव होते हैं तो कोई-कोई चुनाव सामने दिखता है तो कोई हिम्मत नहीं करता है। और फिर कोर्ट-कचहरी से भी तुरंत stay मिल जाते हैं तो ये कई कठिनाईयों से भी रोड बढ़ते ही नहीं हैं।

हमने छोटा-सा निर्णय किया हमने कहा जब रोड बनाएंगे, तो जो जमीन acquire करेंगे दो छोर पर ups and down का रोड बनाएंगे और बीच में जगह खाली रखेंगे जब expansion करना होगा, तो वो अंदर की तरफ करेंगे, तो encroachment का सवाल नहीं आएगा। अब चीजें छोटी होती हैं, लेकिन ये लंबे अरसे तक सहाय करने वाली है। उसी प्रकार से हमारे यहाँ जिस प्रकार से देश का विकास हो रहा है, तो बहुत-सी चीजें आवश्यक हैं। क्यों न अभी से हम, उसके साथ सामान्य मानविकी जो Facilities की जो आवश्यकता है, 20 किलोमीटर 30 किलोमीटर क्यों न व्यवस्था करें? Rest-Room वगैरह क्यों न साथ में उसके डिजाइन में क्यों न हो? उस पर बल दे रहे हैं।

उसी प्रकार से ग्रामीण व्यक्तियों को अपना माल शहर में बेचना है, तो क्यों न इस बड़े रोड रास्तों के नजदीक में ऐसी कोई जगह हो, जहां से वो माल ला करके वहां से बेचने के लिए लाए। यानी एक Comprehensive Development की दिशा में हमारा प्रयास चल रहा है। और उसी के तहत इस काम को करेंगे। एक साथ 1500 bridge, करीब 51 हजार करोड़ रुपये की लागत। कभी तो रेल और रोड उनके बीच में इतने कागज चलते थे, कभी-कभी लगता है कि सारे पत्र व्यवहार को इकट्ठा करे, तो एकाद यहां monument bridge बना सकते हैं। हमने कहा ऐसा नहीं भई बैठो, बैठ करके बताइए क्या समस्या है, अब क्या किया फॉर्मूला बना दिया कि रेलवे के ऊपर bridge बनाया तो ऐसा बनेगा, रोड और रेल को क्रॉसिंग होता है, तो ऐसा bridge बनेगा, इसकी ये डिजाइन होगी। अब ये डिजाइन आती है, तो तुरंत उसको sanction कर दो। तेज गति से चीजे sanction हो रही हैं, आगे बढ़ रही हैं। उसी का परिणाम है कि आज 1500 bridge, जिसमें repairing का भी है, नए निर्माण का काम भी है और समय सीमा में करने की दिशा में काम करने का सोचा गया है। Land की जरूरत होगी तो उसके लिए राज्य सरकारों से बात करके आगे बढ़ना है। कोशिश ये है कि हम बदलाव लाएं और ये बात हम मान के चलें जैसे शरीर में नसों का role है, धमनियों का role है, veins का role है और उसकी जो गतिविधि और काम है उससे वो शरीर को शक्ति भी देते हैं, शरीर को गति भी देते हैं। जो ये नसें veins शरीर में role करती हैं वैसे ही ये Infrastructure इस राष्ट्र के शरीर में काम करता है। अगर Road Infrastructure आपका होगा, Rail Infrastructure होगा आप गति बढ़ाएंगे।

युग बदलते ही Infrastructure की परिभाषाएं बदलती हैं। पहले एक मुझे याद है, जब हम छोटे थे, तो ये अकाल जब होता था तो अकाल में मिट्टी का काम निकलता था। तो गांव के लोग चिट्ठियां लिखते थे, के भई हमारे गांव में मिट्टी का करवा दीजिए, ताकि हमको जाने-आने की सुविधा हो जाए। तो अकाल के काम में मिट्टी डलवाते थे, मिट्टी डल गई तो वो कहते वाह, वहां बहुत बड़ा काम किया। हमारे MLA, MP बड़े सक्रिय हैं, बड़ा संतोष हो जाता था। फिर थोड़ा समय आया बोलते साहब थोड़ा Tar-Road बना दीजिए, आज गांव का आदमी भी कहता है साहब Fiber-Road चाहिए। Fiber-Road चाहिए उसको, ये जो बदलाव आया है, हमने भी उसको ने meet करने की दिशा में काम करना पड़ेगा। और उस दिशा में हम प्रयास कर रहे हैं। ग्रामीण सड़कों पर हमारा बल है।

आपने देखा होगा, इस बार प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना में बहुत बड़ी मात्रा में बजट डाला गया। ये Infrastructure है जो मैंने कहा, शरीर में नसों का काम है उसी प्रकार से गति देने वाला काम है। एक जमाना था मैंने कहा, अगर मिट्टी डाल दी है तो संतोष होता था, आज highways भी चाहिए I-ways भी चाहिए। Iways-Information Ways, I-ways और highways, ये साथ-साथ करना हो इसलिए सरकार की कोशिश है। Digital Optical Fiber Network खड़ा करना है, उसी प्रकार से Agriculture Sector के Infrastructure का जो महत्व है, जितना हम Irrigation Infrastructure खड़ा करते हैं, उतनी पूरे Agriculture Sector को ताकत मिलती है। हम उस पर बल दे रहे हैं।

Railway, पहले क्या था? Railway यानी पार्लियामेंट में बेंच पर तालियां बज जाएं। तो ये इस MP को खुश करने के लिए उसके रास्ते से निकलने वाली, एक ट्रेन घोषित कर दो, तो उस रास्ते पर पड़ने वाले सारे दस-बारह MP खुश हो जाएंगे। ये ही करना, फिर करना-वरना कुछ नहीं, यार देखना पुरानी कई घोषणाएं पड़ी हैं, जिसको अब तक चालू नहीं किया गया। हमने कहा भाई ये तालियां बजाने से देश नहीं चलेगा, रेलवे में आमूल-चूल परिवर्तन लाना चाहिए। रेल, रेल की पटरियां डालो, gaze बदलो, आप, आप उसको डीजल से electrification की तरफ ले जाओ, Environment की दृष्टि से काम करो, गति की दृष्टि से काम करो, एक पूरा, पूरा focus बदल दिया है रेलवे का। अभी तक हमारे देश में अकेले railway में जो reform हो रहे हैं उस पर किसी का ध्यान नहीं गया है। वो जो Big Bank की बातें करते हैं, reform की बातें करते हैं, सिर्फ Railway देख लें कि कैसे बदलाव किया है तो उनको अंदाज आ जाए कि कहां से कहां Railway जा सकती है।

चाहे optical fiber network हो, चाहे Railway network हो, चाहे road network हो, चाहे bridges का निर्माण हो। हर एक पूरे देश में और qualitative change। सिर्फ किलोमीटर नहीं बढ़ाने हैं। हमें qualitative change लाना है और एक

लंबे अरसे की आवश्यकताओं की पूर्ति को ध्यान में रख करके लाना है। मुझे विश्वास है कि राष्ट्र को सशक्त बनाने में, राष्ट्र को समृद्ध बनाने में, राष्ट्र को गतिशील बनाने में Infrastructure अहम भूमिका अदा करता है। जैसे शरीर की मजबूती का कारण शरीर की नसों का role है, veins का role है, वैसे ही राष्ट्र की मजबूती का आधार इस Infrastructure पर है, road network पर है, Rail network पर है, optical fiber network पर है, water connectivity पर है, grid connectivity पर है, electricity generation पर है, electricity supply पर है। ये चीजों पर हम जितना बल देंगे, उतना ही आने वाले दिनों में परिवर्तन आने वाला है। और इसलिए ये सरकार उस दिशा में काम कर रही है।

मैं नितिन जी को बधाई देता हूँ कि सेतु भारतम् के माध्यम से देश में bridges की तरफ देख रहे हैं। मैं तो चाहूंगा कि हमारी जितनी Universities हैं, खास करके Engineering and Architecture, वे देश में सबसे oldest bridge, उसकी Technology उस पर कोई Phd करे कोई student, दुनिया में क्या हो रहा है उस पर Phd. हम एक इसको एक science के रूप में develop करें। उसी प्रकार से हमारे Engineering और Architecture के students, उनको internship के लिए हम bridges पर अवसर दें। बहुत बड़ी मात्रा में रोजगार की भी संभावना होगी, और हमारे यहां qualitative man-power तैयार होगा। तो एक प्रकार से human resource development भी हो, दूसरी प्रकार से Infrastructure भी develop हो, हमारे Institutions की capability बढ़े, उन सारी बातों को एक साथ लेकर के हमें आगे बढ़ना है। मैं फिर एक बार बहुत-बहुत बधाई देता हूँ। बहुत-बहुत धन्यवाद।

डॉ. अतुल कुमार तिवारी, अमित कुमार, सोनिका, निर्मल शर्मा

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

07-अगस्त-2016 22:52 IST

गजवेल तेलंगाना में प्रधानमंत्री का मूल पाठ

विशाल संख्या में पधारे मेरे भाइयों और बहनों।

मेरे प्यारे भाइयों बहनों तेलंगाना बनने के बाद ये मेरी पहली Visit है और हिन्दुस्तान में तेलंगाना सबसे छोटी उम्र का राज्य है। सिर्फ दो साल हुए हैं। लेकिन दो साल की इतनी छोटी आयु में तेलंगाना ने जन आकांक्षाओं की पूर्ती के लिए, जन सामान्य की आवश्यकताओं के लिए जिस प्रकार से कदम उठाए हैं उससे मुझे विश्वास है कि जिस इरादे से तेलंगाना बनाया गया तेलंगाना के लोग तेलंगाना की सरकार उन सारे संपनों को पूरा कर के रहेगी। ऐसा मेरा विश्वास है।

आज मुझे पंचशक्ति के दर्शन हुए। इस पंचशक्ति में शरीक होने का अवसर मिला जिसमें पानी भी है, प्रकाश भी है, परिवहन भी है, एक साथ पांच प्रकल्प और वो भी भारत सरकार और तेलंगाना सरकार मिलकर के और यही तो Cooperative Federalism है। एक समय था भारत में हमेशा केन्द्र और राज्य के बीच तनाव की भाषा का उपयोग होता था। आज ऐसा वक्त आया है कि केन्द्र और राज्य मिलकर के भारत को नई ऊंचाइयों में ले जाने के लिए कंधे से कंधा मिलाकर के काम कर रहे हैं। अभी Parliament में आजादी के बाद सबसे बड़ा आर्थिक Reform का काम हुआ। उसमें श्रीमान चन्द्रशेखर राव और उनकी पार्टी ने भरपूर समर्थन किया। इसके लिए मैं उनका बहुत-बहुत आभार व्यक्त करता हूँ।

आज मैं यहां देख रहा हूँ कि भारत सरकार और तेलंगाना मिलकर के बिजली का काम हो, Fertilizer का काम हो, रेल का काम हो, पानी का काम हो, एक साथ मिलकर के बढ़ने कि दिशा में कदम उठा रहे हैं। यही रास्ता है, जो देश को आगे बढ़ाएगा। और मैं एक बात कहूंगा। चन्द्रशेखर राव मुख्यमंत्री बनने के बाद मुझे जितनी बार मिले हैं, हर बार उन्होंने तेलंगाना की विकास की बात की है। हर बार उन्होंने पानी के विषय में, इतने Emotional होकर के वो बातें करते थे। ऐसा लग रहा था कि पानी उनके जीवन का बहुत बड़ा मिशन बन गया हो। एक बार मेरे पास आए बोले, “मोदी जी मैंने मेरी टीम गुजरात भेजी थी। और कच्छ में आपने कैसे पानी पहुंचाया है। उसका अध्ययन करने के लिये गए थे। और जहां-जहां पानी का अच्छा काम हुआ है। मैं उसका अध्ययन कर रहा हूँ। और मैं पूरे तेलंगाना में पीने के पानी के लिए एक दीर्घकालीन योजना बनाऊंगा और घर-घर पानी पहुंचाऊंगा।”

कुछ लोगों की सोच ऐसी है, कि संसाधनों से सब योजनाएं सफल होती है। ये सही है कि संसाधन तो लगते ही लगते हैं। लेकिन सिर्फ संसाधनों से सफलताएं नहीं मिलती संकल्प भी होना चाहिए और जब संकल्प होता है तो जनसामान्य जुड़ जाता है और तब जाकर के सफलताएं प्राप्त होती है। आज काम का शुभारम्भ हुआ है। लेकिन मुझे विश्वास है कि काम आगे बढ़ेगा।

भारत सरकार ने भी एक सपना देखा है। प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना। हमारे देश के किसान को अगर पानी मिल जाए, तो मिट्टी में से सोना पैदा करने की ताकत रखता है। और इसलिए पूरे देश में पानी पहुंचाना एक वृहत काम जहां-जहां Water Resources हैं, जहां-जहां catchment Area है, जहां-जहां Command Area है और सालों से अटकी पड़ी योजनाएं हैं। पिछले दिनों हमने Cabinet में इन योजनाओं का निर्णय किया है। आने वाले दिनों में देश के किसानों को पानी पहुंचाने की दिशा में एक अहम भूमिका अदा करेगा। भारत का गांव भारत का Agriculture Sector ये हमारी आर्थिक ताकत है। उस ताकत को बल देना उसे हम प्राथमिकता के आधार पर ध्यान दे रहे हैं। लेकिन मैं यह भी कहना चाहूंगा कि तेलंगाना की धरती से देशवासियों को भी कहना चाहूंगा। जब पानी होता है तब हमें कभी पानी का मूल्य समझ नहीं आता है। बहुत प्यास लगी हो और दूर तक कहीं पानी नजर न आता हो, तो इंसान का हाल क्या होता है। जब पानी नहीं होता है तब पता चलता है। लेकिन जब पानी होता है तब सबसे ज्यादा उदासीनता उसके प्रति होती है। और इसलिए ये हमारा नागरिक धर्म है कि हम पानी को बचाएं। अगर पानी बचेगा तो पानी पहुंचेगा और अगर पानी पहुंचेगा तो एक नई जिन्दगी प्राप्त होती है। और इसलिये वर्षा का एक-एक बूंद पानी कैसे बचाया जाए।

आपमें से किसी को अगर पोरबंदर महात्मा गांधी के जन्म स्थान पर जाने का सौभाग्य मिला हो, तो मेरा आपसे अनुरोध है

कि कभी जाने का मौका मिले तो कभी एक बार जरूर देखिए कहां पर महात्मा गांधी जन्मे थे वहां तो आप नमन करेंगे और फूल भी चढ़ाएंगे। लेकिन वहां पर आज से 200 साल पहले वर्षा का पानी बचाने के लिए हर घर में क्या व्यवस्था रहती थी। जमीन में पानी का कैसा टैंक रहता था। साल भर पानी खराब न हो जाए। उसके लिए क्या टैक्नॉलॉजी होती थी। 200 साल पुरानी वो व्यवस्था आज भी महात्मा गांधी के जन्म स्थान को देखने जाएंगे, तो देखने को मिलती है। 200 साल पहले पानी का संकट नहीं था। उस समय भी हमारे लोग पानी के महत्व को समझते थे और आज तो पूरी दुनिया पानी के संकट से गुजर रही है। तब हमारा दायित्व और भी ज्यादा बढ़ जाता है। और इसलिए इस योजना के तहत सिर्फ पानी पाने का आनन्द नहीं होना चाहिए। पानी को प्रसाद की तरह संभालने का भी दायित्व का भाव बढ़ता चला जाना चाहिए। तब जाकर के लाभ होगा।

आज यहां एक बिजली के कारखाने का शिलान्यास हुआ। एक बिजली के कारखाने का लोकार्पण हुआ। जो राज्य कभी बिजली की कमी से जूझते थे। Shortfall था। आज मैं गर्व के साथ कह सकता हूं कि भारत सरकार और हमारे पीयूष गोयल जी और उनके मंत्रालय ने दो साल में ऐसी स्थिति पैदा की है कि जो राज्य बिजली के कमी के कारण परेशान थे ऐसे राज्यों को भी बिजली सम्पन्न स्टेट बना दिया गया है। अगर इरादा नेक हो, सामान्य मानवी की आवश्यकताओं की पूर्ति करने का इरादा हो, तो समस्याओं के समाधान भी निकल आते हैं। और अभी पीयूष जी मुझे बता रहे थे कि पहले अगर तेलंगाना को बिजली खरीदनी होती थी तो एक यूनिट का करीब-करीब ग्यारह साढ़े ग्यारह रुपया लगता था। यूनिट का ग्यारह साढ़े ग्यारह रुपया भाइयों बहनों आज भारत सरकार ने जिस प्रकार से बिजली में रिफॉर्म किये। बिजली के उत्पादन को बढ़ाया।

Transition Line में खर्चा किया। सारा संतुलित कारोबार किया। उसका परिणाम यह है कि आज कुछ समय पहले जो बिजली यूनिट ग्यारह साढ़े ग्यारह रुपया में मिलती थी। आज मैं आज इसी वक्त इसी तारीख एक रुपया दस पैसे में मिलती है। राज्य के खजाने का कितना पैसा बचेगा। राज्य के खजाने में पैसा आएगा, तो राज्य के लोगों की भलाई के लिए कितना काम आएगा। इसका आप भली भांति अंदाज कर सकते हैं। इसलिये भाइयों बहनों बिजली में हम Nuclear Power पर बल दे रहे हैं। Hydro पर बल दे रहे हैं। Solar पर बल दे रहे हैं। क्योंकि पानी, प्रकाश ये जिन्दगी की सबसे बड़ी अनिवार्यता होती है। और दोनों चीजें प्रमात्मा से मिलती है। पानी भी परमात्मा की कृपा से आता है और प्रकाश भी सूरज देवता की कृपा से आता है और इसलिए Solar Energy पर बल दिया है।

मैं अभी मुख्यमंत्री जी से बात करते बता रहा था कि आपका जो पानी पहुंचाने का प्रयोग है इसको Solar Energy के साथ Attach कीजिए। ताकि पानी पहुंचाने का पूरा प्रयोग बिजली के खर्च से मुक्त हो जाएगा। तो वो Economically viable बनाने में सुविधा होगी। एक जमाना था, देश में एक हजार मेगावाट से भी कम Solar Energy थी। एक हजार से भी कम आज दो साल के भीतर-भीतर वो तीन हजार मेगावाट से भी ज्यादा हो गई है। काम की गति कितनी तेज है। काम का Quantum कितना बड़ा है। इसका आप अंदाज कर सकते हैं।

आज यहां बहुत वर्षों से जिस रेल लाइन की आप मांग कर रहे थे। आज इस रेल लाइन का शिलान्यास हो रहा है। कितने ही प्रधानमंत्री आकर गए। अपने भी आए बाहर के भी आए। हर बार हर सांसद ने इस रेल लाइन के लिए हर सरकार से मांग की। लेकिन कभी भी दूर-दूर तक रेल लाइन नजर नहीं आई। आज के युग में विकास के लिए Connectivity बहुत आवश्यक है। Infrastructure का आर्थिक रूप है। और इसलिए हम पूरे देश में आर्थिक विकास को और रेल Connectivity को जोड़कर के आगे करने का प्लान कर रहे हैं। पहले तो रेल की स्थिति ऐसी थी कि चार एमपी इकट्ठे होकर के जरा आवाज करें, तो रेल मंत्री कह देते अच्छा ठीक है एक डब्बा तुम्हें दे देते हैं। चार एमपी और मिल जाए तो कह देते थे कि ठीक है यहां पर तुमको स्टोपिज दे देंगे। रेल ऐसे ही चलती है। हमने आमूलचूल परिवर्तन किया। देश के आर्थिक विकास को ध्यान में रखते हुए। जन सामान्य की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए। रेल का Nationalize करते हुए रेल को हम आगे बढ़ाना चाहते हैं। और आज इस योजना के तहत रेल का प्रोजेक्ट तेलंगाना की लंबे अरसे की मांग थी इसको हम आज पूरा कर रहे हैं। और मुझे विश्वास है कोई अगर रुकावट नहीं आई तो समय सीमा में इस रेल प्रोजेक्ट को भी पूरा कर देंगे। और यहां की जनसामान्य की आवश्यकताओं की आज तेलंगाना के इतिहास में पहली बार और सबसे पहला Fertilizer का कारखाना उसका शिलान्यास हुआ है।

तेलंगाना के पास Fertilizer का कोई कारखाना नहीं है। किसान को यूरिया चाहिए। किसान को खाद चाहिए। अगर खाद का उत्पादन नहीं होगा, तो खाद की बढ़ती हुई मांग है Fertilizer की बढ़ती हुई मांग है उसका हम पूरा नहीं कर सकते। पहले किसानों को खुश करने के लिए Fertilizer में इतनी सब्सिडी देंगे ऐसी घोषणाएं होती थी। अखबारों में छप जाती थी। चुनाव निकल जाते थे। राजनेताओं का काम हो जाता था। लेकिन मेरा किसान वहीं का वहीं रह जाता था। क्यों सब्सिडी की घोषणा तो होती थी लेकिन Fertilizer ही नहीं मिलता तो फिर सब्सिडी कहां मिलेगी। यही कारोबार है। भाइयों बहनों हमने बल दिया है किसान को Fertilizer पहुंचाना है। और किसान कालेबाजारी में Black Marketing में Fertilizer खरीदने के

लिए मजबूर होता था। यूरिया खरीदने के लिए मजबूर होता था। कुछ प्रदेशों में तो रात रात से Fertilizer खरीदने के लिए लोगों को कतार में खड़ा रहना पड़ता था। कभी-कभी पुलिस लाठी चार्ज करती थी। और तब भी Fertilizer नहीं मिलता था। और जब मैं मुख्यमंत्री बना तो ज्यादातर मुख्यमंत्रियों की चिट्ठी मुझे पहली जो मिली वो चिट्ठी क्या मिली की साहब सीजन है यूरिया की कमी पड़ रही है। हमारे राज्य को इतना यूरिया दीजिए। करीब-करीब सभी राज्य प्रधानमंत्री को यूरिया के लिए चिट्ठी लिखते थे। आज मैं बड़े संतोष के साथ कह सकता हूँ। आज मेरे किसान भाइयों बहनों के सामने सर झुका कर के कह सकता हूँ कि पिछले एक दो साल से किसी भी मुख्यमंत्री को यूरिया के लिए चिट्ठी नहीं लिखनी पड़ी।

हमारे श्रीमान अनन्त कुमार जी के नेतृत्व में Fertilizer के क्षेत्र में हम एक नई क्रांति लाए हैं। नीम कोटिंग यूरिया इसके कारण यूरिया में वो ताकत आई है। जो जमीन का लाभ करती है जो जमीन का भला करती है। नीम कोटिंग के कारण यूरिया में वो ताकत आई है। जिसके कारण यूरिया की जो चोरी होती थी। और कैमिकल फैक्टरियों में चला जाता था। सब्सिडी का बिल फटता था किसानों के नाम पर कुछ लोगों के जेब में सब्सिडी चली जाती थी। और Fertilizer Chemical वोलों के कारखानों में सस्ते दाम पहुंचता था। वो अपना कैमिकल बनाकर के दुनिया में बेचते थे। किसान बेचारा वहीं का वहीं रह जाता था। नीम कोटिंग करने के कारण अब कोई कैमिकल फैक्टरी वाले के लिए एक ग्राम यूरिया भी काम नहीं आ सकता है। भ्रष्टाचार भी गया, चोरी भी गई, सरकारी खजाना लूटा जाता था वो भी बंद हो गया। और किसान को यूरिया आसानी से मिलना शुरू हो गया। आजादी में पहली बार Fertilizer के दाम कम हुए। एक-एक बोरी पर दो सौ रुपया, ढाई सौ रुपया पहली बार संभव हुआ।

भाइयों बहनों अगर समाज के भलाई के लिए काम करते हैं किसानों के गांव के भलाई के लिए काम करते हैं तो किस प्रकार से परिवर्तन लाया जा सकता है। अगर यूरिया इसी को स्टडी बनाकर के स्टडी कर ले तो उसको ध्यान में आएगा कि एक अच्छी सरकार होती है और जैसे अभी चन्द्रशेखर राव भारत सरकार की ईमानदारी की भरपूर तारीफ कर रहे हैं। वे स्वयं भारत सरकार में रहे हैं। उन्होंने भारत सरकार को निकट से देखा है। वे भारतीय जनता पार्टी के नहीं हैं। वह कह रहे हैं कि सालों के बाद दिल्ली में एक ईमानदार सरकार बैठी है उसका परिणाम ये आता है। उसका परिणाम ये आता है। लेकिन भाइयों बहनों हमारी कृषि को हममें बहुत ही बदलाव की आवश्यकता है। ये Fertilizer वगैरह एक रास्ता है लेकिन हमारी इस धरती माता की तबियत का भी तो खयाल करना पड़ेगा। अगर ये धर्ती माता बीमार रही तो कितने ही नए नए संशोधन होंगे। लेकिन कभी न कभी ये मां हमसे रूठ जाएगी। और किसान के लिए तो धरती मां से बड़ी कोई मां नहीं होती। और इसलिये हमने सोइल हेल्थ कार्य के द्वारा इस धरती मां की चिंता की है। उसकी कमियां हों तो कैसे पूरा किया जाए। उसकी शक्ति है तो कैसे उपयोग किया जाए। उस पर बल देने का प्रयास किया है।

इन दिनों गाय के नाम पर बड़ी चर्चा चल रही है। लेकिन हिमाचल के हमारे गवर्नर साहब हैं। वे स्वयं कृषि में अनेक प्रयोग करने वाले व्यक्ति हैं। उन्होंने एक बड़ा अभियान चलाया है हिमाचल में जो गाय लोगों ने छोड़ दी है। ऐसी गायों को वो पकड़-पकड़ के किसानों को दे रहे हैं। दूध नहीं देने वाली गाय किसानों को दे रहे हैं। और किसानों को कहते हैं के आप अपनी खेती के साथ गाय को जोड़ दीजिए। गाय का मलमूत्र आपकी खेती में एक नई ताकत देगी। उन्होंने स्वयं ये प्रयोग किये हैं। सफल प्रयोग किये हैं। और इसलिये जो भी गौ भक्ति में विश्वास करते हैं। जो भी गौ सेवा में विश्वास करते हैं। इन सबसे मेरा आग्रह है कि हम गाय को कृषि के साथ जोड़ें। Agriculture के साथ गाय को जोड़ें। गाय कभी भी बोझ नहीं बनेगी। और महात्मा गांधी गाय के लिए एक बढ़िया बात बताते थे। महात्मा गांधी कहते थे कि हमारी मां हमें बचपन में कुछ समय तक दूध पिलाती है। हमें पालती है। लेकिन गाय मां हमें जीवन भर दूध पिलाती है और हमारा पालन पोषण करती है। गाय मां आगे भी मृत्यु के बाद भी मनुष्य के काम आती है जिस प्रकार से पेड़ और पौधे एक Wealth है सम्पत्ति है। वैसे हमारे Cattle भी Wealth है सम्पत्ति है। उसका एक उचित रूप से आयोजन करके राष्ट्र के उसके आर्थिक विकास से जोड़कर के आवश्यकता है। और कभी-कभी चिंता भी सताती है। जो लोग समाज के ताने बाने को तोड़ने में तुले हुए हैं। जो लोग समाज को तहस नहस करने पर तुले हुए हैं। जो लोग हिन्दुस्तान की एकता की बात से परेशान होते हैं। ऐसे कुछ मुट्ठी भर लोग गौ रक्षा के नाम पर समाज में टकराव लाने की कोशिश कर रहे हैं।

मैं सभी देशवासियों को कहना चाहता हूँ। ऐसे फेक ऐसे नकली गौ रक्षकों से सावधान हो जाइए। मैं राज्य सरकारों से भी कहता हूँ कि हमारी कृषि को बचाने के लिए, हमारे किसान को बचाने के लिए हमारे गांव को बचाने के लिए और जो बात विनोबा भावे कहते थे। जो बात महात्मा गांधी कहते थे। जिस गौ रक्षा के लिए विनोबा जी ने आमरण अंशन किया था। जिस गौ रक्षा के लिए भारत के संविधान में निर्देश है इस गौ रक्षा के लिए ये बात जिस बात को गांधी ने माना हो वो गलत नहीं हो सकती है। लेकिन ये जो नकली गौ रक्षक हैं इनको गाय से लेना देना नहीं है। वे समाज में तनाव पैदा करना चाहते हैं और इसलिए हमारी सरकारों को कहना चाहता हूँ इसलिए आप भी ऐसे नकली गौ रक्षकों की छानबीन कीजिए। उन पर कठोर कार्रवाई कीजिए। और साथ-साथ मैं सच्चे गौ भक्तों को प्रार्थना करना चाहता हूँ, सच्चे गौ पूजकों को प्रार्थना करना चाहता हूँ। आप भी सजग रहिए। कहीं आपका ये उमदा काम मुट्ठी भर लोग अपने निजी स्वार्थ के लिए तबाह न कर दें ऐसे लोगों को खोज करने में आप भी आगे आइए। ऐसे लोगों की इस प्रकार की प्रवृत्ति करने से खुला कर लीजिए

समाज के सामने उसको। ताकि ऐसे लोगों की हरकत न चले।

भारत विविधताओं से भरा हुआ देश है विविध मान्यताओं से भरा हुआ देश है। अनेक सम्प्रदायिक मान्यताओं से चलने वाला देश है। देश की एकता अखंडता ये हमारी प्राथमिक जिम्मेवारी है। और इसलिए इसको परिपूर्ण करने के लिए हम सब देशवासियों ने सकारात्मक रूप से गौ सेवा करें गौ भक्ति करें गौ पूजा करें गौ समर्थन करें। वो तो राष्ट्र की सम्पत्ति में बढ़ावा करना है। वो राज्य राज्य के लिए संकट नहीं पैदा करता है। लेकिन नकली लोग देश को और समाज को तबाह कर देते हैं। उनके सामने जागरूक होने की जरूरत है। ऐसे लोगों को isolate करने की जरूरत है। ऐसे लोगों को Expose करने की जरूरत है। ऐसे लोगों को दंडित करने की जरूरत है। तब जाकर के हम सब शान से देश को नई ऊंचाइयों पर ले जा सकते हैं।

भाइयों बहनों हर समस्या का समाधान एक ही बात में है। हमारी सारी आवश्यकताओं की पूर्ति सिर्फ और सिर्फ विकास के मार्ग से होगी। आज मुझे खुशी है कि राज्यों राज्यों के बीच विकास की स्पर्धा हो रही है। हर राज्य को लगता है मैं उस राज्य में आगे निकल जाऊँ। ये तंदरुस्त स्पर्धा देश को नई ऊंचाइयों पर ले जाएगी। और इसलिए मैं सभी राज्यों के मुख्यमंत्रियों को आह्वान करता हूँ। आइए राज्यों राज्यों के बीच विकास की स्पर्धा करें। राज्यों और केन्द्र के बीच विकास की स्पर्धा हो। गर गांव गली मोहल्ले में विकास की स्पर्धा हो।

उसने इतना किया मैं उतना कर के दिखाऊंगा। उसने इतने में किया मैं उससे कम में कर के दिखाऊंगा। उसने इतना अच्छा बनाया मैं इससे भी बेहतर बना कर कर दूंगा। ये वातावरण बनाने का प्रयास करने की जरूरत है। देश देखते ही देखते नई ऊंचाइयों को पार कर लेगा। मैं फिर एक बार आदरणीय मुख्यमंत्रियों का आभारी हूँ। जितने विषय उन्होंने रखे हैं। मैं तेलंगाना वासियों को विश्वास दिलाता हूँ। दिल्ली सरकार विकास के हर काम में कंधे से कंधा मिलाकर के आपके साथ चलेगी। हम मिल कर के विकास की ऊंचाइयों को पार करेंगे। अब दिल्ली आपके लिए दूर नहीं है। आपका हैदराबाद जितना आपका है दिल्ली भी उतना ही आपका है। इस विश्वास के साथ आगे बढ़ें। बहुत बहुत धन्यवाद।

हिमांशु सिंह /शौकत

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

22-अक्टूबर-2016 19:45 IST

वडोदरा, गुजरात में 22 अक्टूबर, 2016 को हरनी हवाई अड्डे पर इंटीग्रेटेड टर्मिनल का उद्घाटन करने के बाद प्रधानमंत्री का सम्बोधन

मंच पर विराजमान गुजरात के गवर्नर श्रीमान ओम प्रकाश कोहली जी, गुजरात के मुख्यमंत्री विजय रूपानी जी, उप-मुख्यमंत्री श्री नितिन भाई पटेल, केंद्र में मंत्रीपरिषद् के मेरे साथी श्रीमान अशोक गणपति राजू जी, जयंत सिन्हा जी, यहां की सांसद श्रीमति रंजनबेन, इस क्षेत्र से विधायिका मनीषा बेन, राज्य सरकार के मंत्री श्रीमान राजेंद्र जी, विभाग के सचिव श्रीमान आर. एन. चौबे जी, एयरपोर्ट अथॉरिटी ऑफ इंडिया के अध्यक्ष डॉ. गुरुप्रसाद महापात्र, उपस्थित सभी

भाइयों और बहनों..

2014 के मई महीने में प्रधानमंत्री के रूप में आप सब ने मुझे कार्य का जिम्मा सौंपा था। तब कुछ ही समय में दो ऐसे महत्वपूर्ण काम थे जो हमने किए। उनमें एक ऐसा काम था जिसके लिए गुजरात पांच दशक से इंतजार कर रहा था, संघर्ष कर रहा था और कठिनाइयां झेल रहा था। वह था सरदार सरोवर बांध की ऊंचाई बढ़ाने का काम।

सरकार में आते ही, शुरू के दिनों में जो पहले काम हमने किए उनमें से एक था सरदार पटेल के नाम पर बनी सरदार सरोवर योजना की ऊंचाई बढ़ाने के काम की अनुमति देना, और मैं गुजरात सरकार का अभिनंदन करता हूँ क्योंकि जिस तेज गति से इस काम को आगे बढ़ा रही है, मुझे विश्वास है कि समय सीमा से कुछ पहले ही गुजरात सरकार इस काम को पूरा कर देगी।

दूसरा, इस एयरपोर्ट के निर्माण का काम। इसका कार्य भी वर्ष 2014 के जून-जुलाई में आरंभ कर दिया गया और आज हिंदुस्तान के जो गणमान्य एयरपोर्ट गिने जाएंगे उनमें एक एयरपोर्ट वडोदरा का भी माना जाएगा।

इन दिनों भारत सरकार स्थापत्य के क्षेत्र में जो कुछ भी काम करती है, उसमें एक बात पर बल दिया जाता है कि पर्यावरण के अनुकूल हो और इको-सिस्टम का खयाल रखा गया हो। मुझे खुशी है कि भारत में नई सरकार बनने के बाद दो एयरपोर्ट एक प्रकार से हरित आंदोलन का हिस्सा बने हैं। एक एयरपोर्ट का उद्घाटन केरल के कोच्ची में किया और दूसरा आज वडोदरा एयरपोर्ट, जो राष्ट्र को समर्पित हो रहा है।

यह टर्मिनल कचरे से संपदा निर्माण पर आधारित, ऊर्जा बचाने वाला और पर्यावरण अनुकूल है। जब इस प्रकार की प्रतिष्ठित इमारतें तैयार होती हैं तो सामान्य जनता का उत्साह भी इस प्रकार के काम को देखकर बढ़ता है। प्रारंभ में चीजें ज्यादा महंगी होती हैं लेकिन एक बार सरकार हस्तक्षेप करे और शुरुआत कर दे तो तो सामान्य नागरिक के लिए भी वे आर्थिक रूप से कम दाम पर तैयार होती हैं।

एक समय था जब कोयले से चलने वाले बिजली के कारखाने के अगल-बगल में कोयले की राख का ढेर लगा रहता था। बिजली के कारखाने से बड़ा ढेर कोयले की राख का होता था। और कायले की राख उठाने के लिए पैसे देने पड़ते थे। आस-पास रहने वाले लोग चिल्लाते थे कि भई ये हटाओ, हम तो मर जाएंगे। इस टर्मिनल की बिल्डिंग में जिन ईंटों का जो उपयोग हुआ है वो कोयले की राख से बनी ईंटों का उपयोग हुआ है। उससे मजबूती भी मिलती है और जिस कचरे को हटाने में खर्चा करना पड़ता था वही यहां काम में लाया गया है और पर्यावरण की रक्षा की गई है।

भारत में विमानन क्षेत्र बहुत तेज गति से आगे बढ़ रहा है। उसका विकास बहुत तेज है। अब मध्यमवर्गीय परिवार का हवाई यात्रा का मन करता है, उसे ट्रेन से जाना अच्छा नहीं लगता। रिश्तेदार पूछेंगे, अरे ट्रेन में आए? तो उन्हें लगता है कि नहीं, हमें हवाई जहाज में जाना चाहिए। ये हमारे देश में अब प्रतिष्ठा से जुड़ने लग गया है।

एक अनुमान है कि भारत के हवाई अड्डों पर पांच साल के भीतर ये स्थिति होगी कि अमेरिका की जितनी जनसंख्या है उतने लोग हमारे देश में साल भर में हवाई अड्डों पर होंगे। यानि आप कल्पना कर सकते हैं कि विमानन क्षेत्र कितना आगे बढ़ने वाला है। भारत शायद बहुत ही निकट भविष्य में दुनिया का तीसरे नंबर का देश बनेगा जो एयरपोर्ट एक्टिविटी के

मानकों को पार कर जाएगा. इससे रोजगार की संभावनाएं बढ़ने वाली हैं. इसके कारण आर्थिकी और कारोबार को गति मिलती है।

देश आजाद होने के बाद पहली बार इस सरकार ने अलग से विमानन नीति बनाई है. हमारे देश में विमान उड़ते थे, हवाई अड्डे बनते थे, विमान की खरीद-बिक्री होती थी लेकिन देश की कोई विमानन नीति नहीं थी. इसलिए पांच साल में इसे कहां पहुंचाना है, दस साल में कहां पहुंचाना है, देश के सामान्य नागरिक की जरूरतों के लिए क्या करना है इसका कोई दृष्टिकोण नहीं था। चलता था तो चलता था, दौड़ता था तो दौड़ता था, रुकता था तो रुकता था। ये था।

ये देश बहुत विशाल है। 80 या 100 हवाई अड्डों से हम देश चलाने के बारे में सोचते हैं तो हम देश की विकास यात्रा में रुकावट पैदा करते हैं। टायर-2, टायर-3 श्रेणी के शहरों में भी उतनी ही संभावना होती है जितनी ऊपर की श्रेणी के शहरों में। अगर उनको विमानन क्षेत्र का लाभ मिले तो देश की विकास यात्रा के नए आयाम खुल सकते हैं। और इसलिए इसे प्रमोट करने के लिए 500 किलोमीटर के हिसाब से 2500 रुपये जैसी टिकट है ताकि किसी दूर-सुदूर नगालैंड जाना है या किसी को अरुणाचल जाना है या किसी को मिजोरम जाना है, किसी को अंडमान-निकोबार जाना है, लक्षद्वीप जाना है, किसी को कच्छ जाना है, किसी को भावनगर, जूनागढ़ जाना है.. ऐसे क्षेत्र हैं जहां आज ट्रैफिक नहीं मिलता है, जहां पुराने वक्त से हवाई पट्टियां बनी पड़ी हैं। तो एक बहुत बड़े पैमाने पर विस्तार के मिशन पर काम चल रहा है। और ये निजी-सार्वजनिक भागीदारी के मॉडल पर काम होने वाला है।

आज दुनिया जिस प्रकार की है उसमें कनेक्टिविटी का बहुत महत्व है। फिजिकल कनेक्टिविटी भी चाहिए, डिजिटल कनेक्टिविटी भी चाहिए। अगर हाइवे चाहिए तो आई-वे भी चाहिए। सूचना तरंगों की भी जरूरत है। उसी प्रकार से हवाई यातायात की भी उतनी ही आवश्यकता है। पर्यटन क्षेत्र में आज हवाई सेवा की बहुत बड़ी जरूरत है।

भारत में पर्यटन की तरक्की तेज गति से हो रही है। संभावनाएं अपार हैं। अगर हम लोगों को स्थलों पर जाने की सुविधा देते हैं तो वे दो-तीन दिन ज्यादा रहते हैं। ज्यादा रहते हैं और ज्यादा खर्च करते हैं तो वहां की अर्थव्यवस्था को बहुत ताकत मिलती है। तो इस लिहाज से हवाई यातायात से बहुत-आयामी आर्थिक असर पैदा होते हैं। उन चीजों को ध्यान में रखते हुए विमानन क्षेत्र को बढ़ावा देने का प्रयास वर्तमान सरकार ने किया है।

वडोदरा वासियों को ये नया नजराना आज मिल रहा है। मुझे विश्वास है कि वडोदरा की अपनी एक पहचान तो है ही, उस पहचान में चार चांद लगाने का काम ये व्यवस्था करेगी।

वडोदरा एक संस्कारी नगरी के रूप में जाना जाता है, लेकिन साथ-साथ वडोदरा शिक्षा का भी हब है। तकनीकी शिक्षा में वडोदरा ने अपनी एक जगह बनाई है. वडोदरा और विद्यानगर ने उस दिशा में काफी काम किया है। इन बातों को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार ने एक बहुत अहम फैसला लिया है। जिसका असर आने वाली पूरी शताब्दी पर रहने वाला है। सौ साल तक जिसका प्रभाव रहने वाला है ऐसा एक महत्वपूर्ण निर्णय किया है। वो निर्णय है कि वडोदरा में देश की पहली रेलवे यूनिवर्सिटी बनेगी।

पूरा विश्व रेलवे के क्षेत्र में अगर 100 नंबर पर पहुंच रहा है तो हिंदुस्तान 10 नंबर पर खड़ा है। आज भी हमारे डिब्बे, उनकी गति, वो इंजी फहराने वाला वो सब ऐसा ही है। दुनिया बदल चुकी है। बहुत अभिनव प्रयोग हुए हैं। पुरानी रेल है लेकिन उसको आधुनिक तकनीकी और अभिनव प्रयोगों के द्वारा भारत की जरूरतों के अनुसार बदला जा सकता है। उस काम को प्राथमिकता देने के लिए भारत सरकार ने, भारतीय रेलवे ने वडोदरा को चुना है।

इस वर्ष रेलवे यूनिवर्सिटी, जो हिंदुस्तान की पहली ऐसी यूनिवर्सिटी है, वो आपके यहां वडोदरा नगरी में बनने वाली है। उससे आप कल्पना कर सकते हैं कि कितना बड़ा योगदान वडोदरा देश के लिए करने वाला है।

आज मुझे आपसे मिलने का अवसर मिला। मैं आप सबका बहुत-बहुत आभारी हूं कि इतनी बड़ी संख्या में आप आए, मुझे आशीर्वाद दिया।

AKT/HS/GSB

पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय

18-नवंबर-2016 21:10 IST

सूरजकुंड में रेल विकास शिविर के उद्घाटन सत्र में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से प्रधानमंत्री के संबोधन का मूल पाठ

आप में से बहुत लोग होंगे, जिनको शायद रात को नींद नहीं आएगी, आप के मन में ऐसा सवाल होगा की प्रधान मंत्री ऐसा क्यों कह रहे हैं? इस का कारण है कि शायद सूरजकुंड की इस जगह के नजदीक रेल लाइन नहीं है। इस लिए पटरी कि आवाज़ नहीं आएगी और आप में से अधिकतम लोग वो हैं जिनको जब तक रेल कि और पटरी कि आवाज नहीं आती उनको नींद नहीं आती होगी। और इसलिए कभी-कभी आप जैसे लोगों के लिए comfort भी un-comfort हो जाता है।

एक अनोखा प्रयास है, मेरा लम्बे अरसे का अनुभव है कि अगर हम कुछ भी परिवर्तन करना चाहते हैं कि बाहर से कितने ही विचार मिल जाए, ideas मिल जाएं, सुझाव मिल जाएं उसका उतना परिणाम और प्रभाव नहीं होता है, जितना कि भीतर से एक आवाज उठे। आप वो लोग हैं जो, जिन्होंने ने जिन्दगी इसमें बितायी है। किसी ने 15 साल किसी ने 20 साल किसी ने 30 साल, हर मोड़ को आप ने देखा हुआ है; गति कब कम हुई गति कब बढ़ी ये भी आपको पता है; अवसर क्या है वो भी पता है; चुनौतियां क्या हैं वो भी पता है, अड़चनें क्या हैं ये भी भली भांति पता है। और इस लिए मेरे मन में ये विचार आया था कि इतनी बड़ी रेल इतनी बड़ी ताकत, क्या कभी हम सब ने मिलकर बैठ करके सोचा है क्या कि सारी दुनिया बदल गयी, सारी दुनिया की रेल बदल गयी; क्या कारण है कि हम एक सीमा में बंधे हुए हैं, ज्यादातर तो stoppage कितने बढ़ाएंगे या डिब्बे कितने बढ़ाएंगे इसी के आस पास हमारी दुनिया चली है।

ठीक है, पिछली शताब्दी में ये सभी चीज़ें आवश्यक थी, ये शताब्दी पूरी तरह technology के प्रभाव की शताब्दी है। विश्व में बहुत प्रयोग हुए हैं, प्रयास हुए हैं, innovations हुए हैं। भारत ने बात समझनी होगी कि रेल, ये भारत की लिए गति और प्रगति की एक बहुत बड़ी व्यवस्था है। देश को अगर गति चाहिए तो भी रेल से मिलेगी, देश को प्रगति चाहिए तो भी रेल से मिलेगी। लेकिन ये बात जो रेलवे में है, वे जब तक इसके साथ अपने-आपको identify नहीं करते, तब तक इतना बड़ा परिवर्तन संभव नहीं है। जो Gang-Man है वो अपना काम अच्छे से करता होगा; जो Station-Master है वो अपना काम अच्छे से करता होगा, जो Regional Manager होगा वो अच्छा काम करता होगा, लेकिन तीनों अगर टुकड़ों में अच्छा करते होंगे तो कभी परिणाम आने वाला नहीं है। और इसलिए आवश्यक ये है कि हमारा एक मन बने, हम सब मिल करके सोचें कि हमें देश को क्या देना है। क्या हम ऐसी रेल चलाना चाहते हैं, कि हमारा जो Gang-Man है, उसका बेटा भी बड़ा होकर Gang-Man बने? मैं इसमें बदलाव चाहता हूं। हम ऐसा माहौल गया बनाएं कि हमारा एक Gang-Man का बेटा भी Engineer बन करके रेलवे में नया योगदान देने वाला क्यों न बने? रेल से जुड़ा हुआ गरीब से गरीब हमारा साथी, छोटे से छोटे तबके पर काम करने वाला हमारा व्यक्ति, उसकी जिंदगी में बदलाव कैसे आए? और ये बदलाव लाने के लिए आवश्यक है रेल प्रगति करे, रेल विकास करे, रेल आर्थिक रूप से समृद्ध बने। तो उसका benefit देश को तब मिलेगा, मिलेगा, कम से कम रेल परिवार के जो हमारे ये 10, 12, 13 लाख लोग हैं, उनमें जो छोटे तबके के लोग हैं, उनको कम से कम मिलना चाहिए। आज जिस प्रकार से हम चला रहे हैं, कभी मुझे चिंता सता रही है, कि मेरे लाखों गरीब परिवारों का होगा क्या? छोटे-छोटे लोग जो हमारे यहां काम कर रहे हैं, उनका क्या होगा? सबसे पहला रेल की प्रगति का benefit रेल परिवार के जो लाखों छोटे तबके के लोग हैं, उनको अनुभव होगा। अगर हमारे सामने रोज काम करते हैं, रोजमर्रा की अपनी जिंदगी हमारे साथ गुजारते हैं, उनकी जिंदगी में बदलाव लाने के लिए सोचेंगे, रेल बदलने का मन अपने-आप हो जाएगा। देश की प्रगति का लाभ सबको मिलेगा।

कभी-कभार आप में से बहुत बड़े-बड़े लोग होंगे, जो बड़े-बड़े Seminar में गए होंगे, Global level के, Conferences में गए होंगे, कई नई-नई बातें उन्होंने सुनी होंगी, लेकिन आने के बाद वो विचार - विचार रह जाता है। एक सपना देखा था, ऐसा लग रहा है। आ करके फिर अपनी पुरानी व्यवस्था में, ढर्रे में हम दब जाते हैं। इस सामूहिक चिंतन से, और हर तबके के लोग हैं यहां, साथ रहने वाले हैं; तीन दिन साथ गुजारा करने वाले। ऐसा बहुत rare होता है, शायद पहली बार होता होगा। समूह चिंतन की बहुत बड़ी ताकत होती है। और कभी-कभार अनुभवी एक छोटा व्यक्ति समस्या का ऐसा हल्का-फुल्का समाधान दे देता है जो कभी बड़े बाबू को ध्यान में नहीं आ सकता है। एक बड़े व्यक्ति के ध्यान में नहीं आता है। यहां दोनों प्रकार के लोग बैठे हैं, जिसके पास अनुभव भी है और जिसके पास एक global exposure पर भी है। ये दोनों लोग जब मिलते हैं तो कितना बड़ा बदलाव ला सकते हैं।

हम कल्पना कर सकते हैं, आपकी व्यवस्था के तहत करीब सवा दो करोड़ से भी ज्यादा लोग प्रतिदिन आपके साथ Interface होता है। लाखों टन माल एक जगह से दूसरी जगह पर जाता है, लेकिन हमारी गति, हमारा समय, हमारी व्यवस्थाएं, जब तक हम बदलेंगे नहीं; अब पूरे विश्व में जो बदलाव आ रहा है, उसके न हम लाभार्थी बन पाएंगे; न हम contributor बन पाएंगे। इस चिंतन शिविर से क्या निकले, कोई agenda नहीं है। agenda भी आपको तय करना है, solution भी आपको खोजने हैं, जो विचार उभर करके आए उसका road-map भी आपको ही बनाना है और बाहर का कोई भी व्यक्ति यह करे, उससे उत्तम से उत्तम आप कर पाएंगे ये मेरा पूरा भरोसा है।

और इसलिए ये सामूहिक चिंतन एक बहुत बड़ा सामर्थ्य देता है। सह-जीवन की भी एक शक्ति है, आप में से बहुत लोग होंगे, जिनको अपने साथी की शक्तियों का परिचय भी नहीं होगा। इसमें कोई आपका दोष नहीं है। हमारी कार्य की रचना ही ऐसी है कि हम अपनों को बहुत कम जानते हैं, काम को जरूर जानते हैं। यहां सह-जीवन के कारण आपके अगल-बगल में जो 12 15, 25 लोग काम करते हैं, उनके भीतर जो extra-ordinary ताकत है, ये हल्के-फुल्के वतावरण में आपको उसका अहसास होगा। आपके पास कितने able human resource हैं। जिसको कभी जाना-पहचाना नहीं, साथ रहने के कारण आपको ध्यान आएगा।

जब आप चर्चा करोगे खुल करके, तो आपको ध्यान में आएगा अरे भाई ये तो पहले सिर्फ ticket window पर बैठते थे और कभी सोचा ही नहीं कि इतना सोचते होंगे, इनके पास इतने ideas होंगे। कभी किसी एक को लें यार ये तो हमारे साब को हम तो सोच रहे थे भाई गंभीर हैं, डर लगता था इनके, नहीं-नहीं तो वो तो बड़े human nature के हैं और उनसे तो कभी बात भी की जा सकती है। ये दीवारें ढह जाएंगी। और किसी भी संगठन की शक्ति उस बात में है कि जब Hierarchy की दीवारें ढह जाएं, अपनापन का पारिवारिक माहौल बन जाए, आप देखते ही देखते परिवर्तन आना शुरू हो जाता है।

तो ये सह-जीवन- सह-जीवन अपने आप में एक बहुत बड़ी ताकत के रूप में परिवर्तित होने वाला है। यहां पर जिन विषयों की रचना की गई है, वो रचना भी काफी मंथन से निकली। मुझे बताया गया कि करीब एक लाख से अधिक लोगों ने इस पूरी विचार-प्रक्रिया में contribute किया है। किसी ने पेपर लिखे हैं, किसी ने छोटे समूह में चर्चा की है, उसमें से कुछ तथ्य निकाल करके फिर ऊपर भेजा गया है, किसी ने online से विचार भेजे हैं, किसी ने अपना SMS का उपयोग करके काम किया है, लेकिन नीचे से ऊपर तबके के एक लाख लोग, रेलवे स्थिति क्या है; संभावनाएं क्या हैं; सामर्थ्य क्या है; चुनौतियां क्या हैं; सपने क्या हैं; उसको अगर प्रस्तुत करता है, तो ये आप लोगों का काम है कि इतने बड़े मंथन में से मोती निकालना।

एक लाख साथियों का contribution है, छोटी बात नहीं है, बहुत बड़ी घटना है ये। लेकिन अगर हम उसमें से मोती खोजने में विफल रहे, और मैंने सुना है कि आप काफी बड़ी तादाद में यहां इस शिविर में हैं। आप लोग बड़ी बारिकाई से मेहनत करने की कोशिश करोगे, तो उसमें से अच्छे से अच्छे मोती निकल आएंगे। और ये मोती जो निकलेंगे, जो अमृत-मंथन से निकलेंगे वो रेलवे को नई ऊंचाइयों पर ले जाने के लिए काम आएंगे।

पहले मेरे मन में विचार ऐसा था आज शाम को आपके बीच रहूं, आप सबके साथ भोजन करूं, वैसे भी मैं ज्यादा समय देने वालों में से व्यक्ति हूं, मेरे पास ज्यादा काम-वाम होता नहीं है, तो बैठ लेता हूं, सुन लेता हूं सबको। लेकिन सदन चालू होने के कारण ऐसा कार्यक्रम बना नहीं पाया। लेकिन परसों मैं आ रहा हूं, ये मैं धमकी नहीं दे रहा हूं, मैं आप सबके दर्शन करने के लिए आ रहा हूं। आप सबके दर्शन करने के लिए आ रहा हूं, जो मंथन आप कर रहे हैं, उस अमृत का आचमन करने के लिए आ रहा हूं। क्योंकि आप हैं तो रेल है, आप हैं तो भविष्य है, और आप पर मेरा भरोसा है और इसलिए मैं आपके पास आ रहा हूं। मिलने के लिए आ रहा हूं, खुले माहौल में आप लोगों से मिलूंगा। वहां के इस मंथन से जो निकलेगा, उसको समझने का मैं प्रयास करूंगा। जो कठिनाई है उसको समझने का प्रयास करूंगा। नीतियां निर्धारित करते समय जरूर इन बातों का प्रभाव रहेगा।

आपने देखा कि, और आपको पूरी तरह ध्यान में आया होगा कि मेरा कोई political agenda नहीं है। रेल बजट जो पहला आया सरकार का, तभी से आपने देखा होगा, normally rail budget का पहलू हुआ करता था किस MP को कहां ट्रेन मिली, किस MP को कहां stoppage मिला, किस MP के लिए नया डिब्बा जुड़ गया, और पूरा रेल बजट की तालियों की गड़गड़ाहट इसी बात पर होती थी। और जब मैंने आ करके देखा कि इतनी घोषणाएं हुई हैं क्या हुआ है भाई। करीब 1500 घोषणाएं ऐसी मेरे ध्यान में आईं, कि जो सिर्फ बजट के दिन तालियां बजाने के सिवाय किसी काम नहीं आईं। ये काम मैं भी कर सकता था, मैं भी तालियां बजा करके खुशी दे सकता, वाह-वाह मोदीजी ने इतना बढिया रेल बजट दिला दिया, कि वो अच्छा हो गया। मैंने उस political लोभ से अपने-आपको मुक्त रखा है और बड़ी हिम्मत करके इस प्रकार की लोक-लुभावनी बातें करने के बजाय मैंने व्यवस्था को streamline करने का साहस किया है।

मैंने राजनीतिक नुकसान भुगतने की हिम्मत की है, इसलिए कि मेरा पहला सपना है कि रेल में मेरा सबसे छोटा आज साथी है, जो कहीं crossing पे खड़ा रहता होगा, कहीं झंडी ले करके खड़ा होता होगा, कहीं सुबह ट्रैक पर पैदल चलता

होगा, क्या उसके बच्चे पढ़-लिख करके, आज जो बड़े-बड़े बाबू परिवार में देख रहे हैं, क्या वो बच्चे भी उस स्थान पर पहुंच सकते हैं क्या? और ये मेरा सपना तब पूरा होगा, जब मैं रेलवे को ताकतवर बनाऊंगा, रेलवे को सामर्थ्यवान बनाऊंगा। और रेलवे सामर्थ्यवान बनेगी तो अपने-आप देश को लाभ होना ही होना है। और इसलिए मेरे साथियो तत्कालिक लाभ लेने का कोई मोह नहीं है, राजनीतिक लाभ लेने का बिल्कुल मोह नहीं है, सिर्फ और सिर्फ शताब्दी बदल चुकी है; रेल भी बदलनी चाहिए।

21वीं सदी के अनुकूल हमें नई रेल, नई व्यवस्था, नई गति, नया सामर्थ्य, ये सब देना है और लोग मिल करके दे सकते हैं। अगर हममें से कोई पहले छोटे एकाध मकान में रहता है तो गुजारा तो करता है, लेकिन कुछ अच्छी स्थिति बनी और मान लीजिए फ्लैट में रहने गए, तो फिर नए तरीके से कैसे रहना, कौन किस कमरे में रहेगा, बैठेंगे कहां पर मेहमान आए, सब सोचना शुरू करते हैं और हो भी जाता है। बदलाव ला देता है इंसान। पहले एक कमरे में रहते थे तो भी तो गुजारा करता था, लेकिन उस प्रकार से जिंदगी को adjust कर लेते थे। अगर आप स्वर बदलेंगे कि हमने 21वीं सदी, बदली हुई सदी में अपने-आपको set करना है तो फिर हम भी बदलाव शुरू कर देंगे और ये संभव है।

साथियो आप में से जितना रेल से नाता जब जितना रहा होगा, कम से कम मेरा नाता पुराना है। मेरा बचपन रेल की पटरी पर गुजरा है। और मैं एक प्रकार से आपके बीच का ही हूं, रेलवाला ही हूं मैं। और उस समय मैंने बारीकी से बचपन में रेलवे को ही हर प्रकार से देखा हुआ है। कुछ और कुछ देखा ही नहीं था जिंदगी में, जो कुछ भी देखा रेल ही देखी। और उसके साथ मेरा बचपन मेरे साथ ऐसे जुड़ा हुआ है कि मैं इन चीजों को बराबर से भलीभांति समझता हूं। और जिस चीज से बचपन का लगाव रहा हो, उसमें बदलाव लाने का जब अवसर आता है तो आनंद कितना बड़ा होगा, ये आप कल्पना कर सकते हैं। रेल में बदलाव होगा, उसका आनंद जितना आपको होगा, मुझे उससे जरा भी कम नहीं होगा। क्योंकि मैं उसी परिसर से पल करके निकला हुआ हूं। आज भी जब मैं काशी जाता हूं मेरी parliamentary constituency में तो मैं रेलवे की व्यवस्था में रात को रहने चला जाता हूं। मुझे जैसे अपनापन सा लगता है, अच्छा लगता है, वरना प्रधानमंत्री के लिए कहीं और भी व्यवस्था मिल सकती है। लेकिन मैं वो रेलवे के guest house में ही जा करके रुकता हूं। मुझे काफी अपनापन सा महसूस होता है।

तो मेरा इतना नाता आप लोगों से है। और इसलिए मेरी आपसे अपेक्षा है कि आइए हम इस तीन दिन का सर्वाधिक उपयोग करें, अच्छा करने के इरादे से करेंगे। अच्छा करने के लिए जिम्मेवारियां उठाने के साहस के साथ करेंगे। साथियों को जोड़ने का क्या व्यवस्था हो? नई हमारी Human Resource Management क्या हो? इन सारी बातों को आप देख करके चिंतन करें।

देश को चलाने के लिए, देश को गति देने के लिए, देश को प्रगति देने के लिए आप से बढ़ करके कोई बड़ा संगठन नहीं है, कोई बड़ी व्यवस्था नहीं है। एक तरफ हिन्दुस्तान की सारी व्यवस्थाएं और एक तरफ रेल की व्यवस्था- इतना बड़ा आपका हुजूम है। आप क्या कुछ नहीं कर सकते हैं? और इसलिए मैं आपसे आग्रह करता हूं समय का पूरा उपयोग हो, focus हो, कुछ करना, निकालना इस इरादे से हो, और आने वाले कम के संबंध में सोचें। कठिनाइयां बहुत हुई होंगी, तकलीफ हुई होगी, अन्याय हुआ होगा, यहां posting होना चाहिए, वहां हो गया होगा, यहां promotion होना चाहिए नहीं हुआ होगा। ऐसी बहुत सी बातें होंगी, शिकायतों की कमी नहीं होंगी, लेकिन ये दिन-दिन आने वाले दिनों के लिए, सवा सौ करोड़ देशवासियों के लिए, बदले हुए विश्व में भारत का झंडा गाड़ने के लिए आप लोगों को मेरी शुभकामनाएं हैं, उत्तम परिणाम दें, यही अपेक्षा के साथ बहुत-बहुत धन्यवाद।

अतुल कुमार तिवारी/अमित कुमार/निर्मल शर्मा

पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय

13-नवंबर-2016 22:45 IST

गोवा में मोपा में ग्रीन फील्ड अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे और इलेक्ट्रॉनिक सिटी के आधारशिला समारोह में प्रधानमंत्री के संबोधन का मूल पाठ

श्री लक्ष्मीकांत जी कह रहे थे कि मैं देर रात जापान से आया और सुबह आपकी सेवा में हाजिर हो गया। यहां से कर्नाटक जाऊंगा, कर्नाटक से महाराष्ट्र जाऊंगा और देर रात दिल्ली में जाकर भी मीटिंग करूंगा। प्रधानमंत्री बनने के बाद भारत के किसी राज्य में एक रात्रि से ज्यादा अगर मैंने कहीं मुकाम किया तो गोवा में किया। मैं आज व्यक्तिगत रूप से गोवा के लाखों नागरिकों का अभिनंदन करना चाहता हूं, आभार व्यक्त करना चाहता हूं, गोवा सरकार का अभिनंदन करना चाहता हूं। मनोहर जी, लक्ष्मीकांत जी, उनकी पूरी टीम का आभार व्यक्त करना चाहता हूं।

कई वर्षों के बाद एक बहुत बड़ा अंतर्राष्ट्रीय event BRICS summit गोवा में आयोजित हुआ और इतने शानदार ढंग से इसकी योजना हुई कि आज पूरे विश्व में जितने भी बड़े नेता आप मानते हैं उनकी जुबान पर गोवा, गोवा, गोवा। इसलिए मैं सभी गोवावासियों की, गोवा सरकार की, मुख्यमंत्री की, मनोहर जी की, उनके सभी साथियों की जी भर के सराहना करता हूं, अभिनंदन करता हूं क्योंकि इससे सिर्फ गोवा की नहीं, पूरे हिन्दुस्तान की इज्जत बढ़ी है, पूरे हिन्दुस्तान का गौरव बढ़ा है और आपके कारण बढ़ा है तो आप स्वाभाविक अभिनंदन के अधिकारी हैं।

भाइयो-बहनों, मेरे लिए खुशी की बात है। आपने देखा होगा कि गोवा में राजनीतिक अस्थिरता की बीमारी ने इस प्रकार से गोवा को बर्बाद कर दिया। पता नहीं, क्या-क्या होता था, आपको मालूम है। कभी इधर तो कभी उधर, कभी उधर तो कभी इधर। इस राजनीतिक अस्थिरता ने गोवा का जो सामर्थ्य है, गोवा के लोगों की जो शक्ति है उसको कभी फलने-फूलने का अवसर ही नहीं दिया। मैं विशेष रूप से मनोहर जी का अभिनंदन करता हूं कि उन्होंने एक Political culture को लाए हैं। इसके कारण उनको सहन भी करना पड़ा है, उनको अच्छे-अच्छे मित्र गंवाने भी पड़े हैं। लेकिन एकमात्र इरादा गोवा को नई ऊंचाइयों पर लेना जाना है इसलिए गोवा में stability, पांच साल तक एक सरकार चले, नीतियों के आधार पर चले, गोवा के विकास के लिए चले, लोक कल्याण के हित के लिए चले, ये उन्होंने करके दिखाया है और 2012 से 2017 तक की स्थिरता का लाभ भरपूर मात्रा में गोवा को प्राप्त हुआ है इसलिए मैं यहां दोनों पार्टियां जो मिलकर के सरकार चला रही है और सबसे बड़ी बात political stability दी है, इसके लिए क्योंकि स्थिर सरकार को चुनना जनता के हाथ में होता है और गोवा की जनता ने स्थिर सरकार की ताकत को समझा है इसलिए मैं उनको बहुत-बहुत अभिनंदन देता हूं, वंदन करता हूं।

मुझे आज इतनी खुशी हो रही है इस बात की। मैं प्रधानमंत्री हूं लेकिन सबको पता है कि मैं किस पार्टी से हूं। लक्ष्मीकांत जी मुख्यमंत्री हैं, सबको मालूम है किस पार्टी से है। मनोहर जी, मेरे साथी हैं, सबको मालूम है किस पार्टी से है। हम एक-दूसरे की तारीफ करे तो लोगों को लगेगा, हां ठीक है आप तो बोलेंगे ही न, लेकिन मुझे खुशी हुई कि एक सप्ताह के पहले एक independent agency ने, एक बहुत बड़े मीडिया हाऊस ने हिन्दुस्तान के छोटे राज्यों की हालत का जायजा लिया। अलग-अलग पैरामीटर पर सर्वे किया और आज मुझे खुशी हो रही है कि मेरे इन साथियों ने, छोटे राज्यों में गोवा को एक चमकते सितारे की तरह पेश कर दिया है। देश के सभी छोटे राज्यों में तेज गति से चाहे social security का मसला हो, स्वास्थ्य का मसला हो, इंफ्रास्ट्रक्चर का क्षेत्र हो, गोवा को तेज गति से नई ऊंचाइयों पर ले गए हैं और गोवा नंबर 1 बना है। और इसमें गोवावासियों का योगदान है ही है, उसके बिना ये संभव नहीं होता और इसलिए मैं आज इस अवसर पर जितना अभिनंदन करूं, जितना धन्यवाद करूं उतना कम है।

मैं जब गुजरात का मुख्यमंत्री था, मनोहर जी यहां मुख्यमंत्री थे। तो मैं एक secret बताता हूं आपको। मनोहर जी जो बात दस वाक्य में बोलनी हो, वो एक वाक्य में बता देते हैं। तो कभी-कभी समझने में भी कठिनाई होती है। वो मानते हैं कि आपने समझ लिया। अब वो आईआईटी के हैं, मैं बड़ा सामान्य इंसान हूं। लेकिन मैं जब गुजरात में था तो उनकी योजनाओं का मैं अध्ययन करता था, मुख्यमंत्री के नाते और मैं देख रहा था कि यहां के गरीब से गरीब व्यक्ति की मुसीबतों को वो कैसे समझते हैं और उसके रास्ते कैसे खोजते हैं, हर योजनाएं। बाद में लक्ष्मीकांत जी ने भी इसको आगे बढ़ाया। जब मैं देखता था, गृह आधार योजना, वार्षिक तीन लाख से कम आय वाली जो महिलाएं हैं, उनको 1500 रुपए की मदद। देश में कई राज्यों को पता तक नहीं होगा कि गोवा में ऐसी योजना शुरू की गई थी। दयानंद सरस्वती सुरक्षा योजना सीनियर सिटीजन के लिए, करीब डेढ़ लाख senior citizen को इसका लाभ मिलता है, 2000 रुपए प्रति माह। ये सारी चीजें हिन्दुस्तान में कहीं नहीं हैं भाइयों, ये गोवा में हैं। भाइयो-बहनों, लाडली लक्ष्मी योजना, गोवा और मध्यप्रदेश ने इसको प्रारंभ किया और 18 साल की बच्चियों को एक लाख रुपए। आज गोवा में 45 हजार हमारी बेटियां इसकी हकदार बनी हैं।

गोवा ने एक बहुत बड़ा काम किया। देखिए मनोहर जी और लक्ष्मीकांत जी की दूरदृष्टि देखिए। आज यहां इलेक्ट्रॉनिक्स सिटी का शिलान्यास हो रहा है। लेकिन इसके पहले इस काम को सफल करने के लिए हमें कैसा युवा धन चाहिए, कैसी यंग जनरेशन चाहिए इसको ध्यान में रखते हुए, इन दोनों महाशयों ने साइबर स्टूडेंट योजना के द्वारा यहां हमारे नौजवानों को डिजिटल दुनिया से जोड़ने का एक अभियान चलाया। ये दीर्घदृष्टि के लिए मैं उनको बधाई देना चाहता हूं। हम जानते हैं

बीमार होना कितना महंगा होता है और गरीब के लिए बीमार होना कितना मुश्किल होता है। ये हमारे गोवा सरकार की विशेषता रही कि उन्होंने दीनदयाल स्वास्थ्य सेवा के द्वारा वार्षिक 3 लाख रुपए तक करीब-करीब सवा दो लाख परिवार यानी एक प्रकार से पूरे गोवा के सभी परिवार आ गए, इनको सुरक्षा का कवच दिया है, उनके स्वास्थ्य की भी चिंता की है। किसान हो, fisherman हो, यानी एक प्रकार से योजनाओं का अंबार है और ये जन सामान्य की भलाई के लिए है। ऐसे गोवा में आकर के जो विकास के रास्ते पर आगे बढ़ रहा है, देश के प्रधानमंत्री को भी अपना सिर झुकाने में आनंद आता है, गर्व होता है।

आज यहां तीन प्रोजेक्ट का आरंभ हो रहा है Mopa new green field airport। शायद गोवा में जिन लोगों की उम्र आज 50 साल हो गई होगी, वो भी जब से समझना शुरू किया है, ये सुनते आए हैं कि एक दिन गोवा में अपना एयरपोर्ट बनेगा, हवाई जहाज आएंगे, लोग उतरेंगे, टूरिज्म बढ़ेगा, सुना है कि नहीं सुना है, बताइए। सब सरकारों ने बोला है कि नहीं बोला है, सब पॉलिटिकल पार्टियों ने बोला है कि नहीं बोला है लेकिन चुनाव गया, हवाई जहाज हवाई जहाज के ठिकाने पर, गोवा गोवा के ठिकाने पर। ऐसा हुआ है कि नहीं हुआ है भाइयों, बताओ मुझे। आज मुझे संतोष है कि अटल बिहारी वाजपेयी जी ने जो वादा किया था आज मुझे उसे पूरा करने का अवसर मिला है। और ये सिर्फ आकाश में जहाज उड़ेंगे और आपके एक नए एयरपोर्ट पर आएंगे, ऐसा नहीं है। गोवा की जनसंख्या है 15 लाख। ये व्यवस्था विकसित होने से तीन गुना लोग, आप 15 लाख लोग है, करीब-करीब 50 लाख लोग आना शुरू कर देंगे। आप कल्पना कर सकते हैं कि टूरिज्म कितना बढ़ेगा। और गोवा का टूरिज्म बढ़ना मतलब, हिन्दुस्तान के टूरिज्म सेक्टर को नई ताकत देने वाली ये सबसे सामर्थ्यवान जगह है, इस बात को हम भली-भांति समझते हैं। गोवा की सुविधा तो बढ़ेगी ही बढ़ेगी, गोवावासियों की भी बढ़ेगी और मुझे विश्वास है कि इसके निर्माण कार्य में भी यहां के हजारों नवयुवकों को रोजगार मिलेगा और निर्माण होने के बाद यहां की इकनॉमी को, टूरिज्म को एक बहुत बड़ा अवसर इस गोवा को मिलने वाला है, ये मैं साफ देख रहा हूं।

भाइयो-बहनों, आज यहां एक Electronic Manufacturing city का भी शिलान्यास हुआ है। कोई ये मत समझे कि ये सिर्फ कोई Industrial estate बन रहा है। बहुत कम लोगों को समझ आएगा कि Electronic Manufacturing city के निर्माण का मतलब क्या है। एक प्रकार से और मेरे शब्द लिखकर के रखना भाइयो-बहनों और 21वीं का मैं वो गोवा देख रहा हूं जहां Digitally trained, youth driven based modern गोवा का आज शिलान्यास हो रहा है दोस्तों। ऐसे गोवा का शिलान्यास हो रहा है जो Digitally trained, youth driven गोवा होगा, आधुनिक गोवा होगा, टेक्नोलॉजी से सामर्थ्यवान गोवा होगा। और वह सिर्फ गोवा की इकनॉमी का गोवा के नौजवानों के रोजगार का नहीं है, ये भारत की शकल-सूरत बदलने का, गोवा एक पावर स्टेशन बन जाएगा दोस्तों, ये मैं देख रहा हूं। पूरी 21वीं सदी पर इस initiative का प्रभाव होने वाला है।

भाइयो-बहनों आज एक तीसरा महत्वपूर्ण काम हम आगे बढ़ाने जा रहे हैं। हमारा स्पष्ट मत रहा है कि सुरक्षा के क्षेत्र में भारत को अपने दम पर खड़ा होना चाहिए। यह देश आजादी के 70 साल हो गए, हम किसी की मेहरबानी के मोहताज नहीं रहना चाहते। हम जीएंगे तो भी अपने बलबूते पर और मरेंगे तो भी अपनी के लिए मरेंगे, अपनी शान के लिए मरेंगे। क्या कारण है कि जिस देश के पास 1800 मिलियन युवा हो, 18 मिलियन 35 से कम आयु के नौजवान हो, तेजस्वी हो, तेज-तर्रार हो, बुद्धि प्रतिभा हो, innovation हो, टेक्नोलॉजी हो, सब कुछ हो लेकिन सुरक्षा के लिए हर चीज बाहर से लानी पड़े। आज गोवा की धरती पर सामुद्रिक सुरक्षा के क्षेत्र में, मेक इन इंडिया की दिशा में एक अहम कदम उठाया जा रहा है।

भाइयो-बहनों, मैं आज गोवा का एक विशेष आभार भी व्यक्त करना चाहूंगा। अकबर के विषय में कहा जाता है कि उसकी टोली में नवरत्न थे और उन नवरत्नों से, विशेषताओं से अकबर के कार्यकाल की चर्चा होती थी। मैं भाग्यशाली हूं कि मेरी टीम में अनेक रत्न हैं और उन रत्नों में एक चमकता हुआ रत्न मुझे गोवा वालों ने दिया है। उस रत्न का नाम है मनोहर परिकर। कई वर्षों के बाद देश को एक ऐसा रक्षा मंत्री मिला है जिसने 40 साल पुरानी हमारी फौज की समस्याओं का समाधान करने के लिए दिन-रात एक कर दिया है। अगर मनोहर परिकर जी का इतना पुरुषार्थ न होता, 40 साल से लटक रहा 'वन रैंक वन पेंशन' का, मेरे देश के लिए मर मिटने वाले जवानों का काम अधूरा रहा होता, मैं मनोहर जी को बधाई देता हूं और आपका आभार व्यक्त करता हूं कि आपने मुझे मनोहर जी दिए। ऐसा सामर्थ्यवान, देश का कोई रक्षा मंत्री पिछले कुछ समय में ऐसा नहीं आया जिस पर कहीं न कहीं ऊंगली न उठी हो। आज हम तेज गति से निर्णय कर रहे हैं। विश्व के साथ समझौते कर रहे हैं, देश की सुरक्षा बढ़ाने के लिए फैसले कर रहे हैं, 28 साल हो गए, रक्षा मंत्रालय पर कहीं से किसी ने ऊंगली तक नहीं उठाई है। मैं मनोहर जी का अभिनंदन तो करूंगा मेरे साथी के नाते, मुझे उत्तम साथी मिला है, लेकिन मैं गोवावासियों का अभिनंदन करूंगा कि आपने मनोहर जी पैदा किए और देश के लिए आपने मनोहर जी दिए। मैं आपका अभिनंदन कर रहा हूं।

भाइयो-बहनों, ये जो mine counter measure vessels program है, एमसीएमपी, ये भारत की सामुद्रिक सुरक्षा में एक बहुत बड़ी भूमिका अदा करने वाला काम है। इससे लोगों को रोजगार तो मिलने ही वाला है, इस क्षेत्र के विकास के लिए भी काम होने वाला है।

मेरे प्यारे गोवा के भाइयों और बहनों, मैं कुछ और बातें भी आज गोवावासियों के साथ करना चाहता हूँ।

08 तारीख, रात 8 बजे, देश के करोड़ों लोग सुख-चैन की नींद सो गए और देश के लाखों लोग नींद के लिए गोलियां खरीदने जा रहे हैं, गोलियां नहीं मिल रही हैं।

मेरे प्यारे देशवासियों मैंने 08 तारीख को रात 8 बजे देश के सामने काले धन के खिलाफ, भ्रष्टाचार के खिलाफ मैं जो लड़ाई लड़ रहा हूँ, देश जो लड़ाई लड़ रहा है, हिन्दुस्तान का ईमानदार इंसान जो लड़ाई लड़ रहा है उस दिशा में एक अहम कदम उठाया है। लेकिन कुछ लोग हैं जो अपने ही ख्यालों में खोए रहते हैं। वे अपनी नाप पट्टी लेकर के ही किसी को नापते रहते हैं और उसमें फिट नहीं होता है तो देखते हैं यार कुछ गड़बड़ है।

अगर इस देश के अर्थशास्त्रियों ने, इस देश की पोलिसिज को समझकर के एनालिसिस करने वालों ने, ये पुरानी सरकारें, पुराने नेता, उनको नापने तौलने के जो तराजू हैं, मेरे आने के बाद अगर बदल दिए होते तो ये दिक्कत नहीं आती। उनको समझ आना चाहिए था कि ऐसी सरकार देश ने चुनी है जिसके पास देश की अपेक्षा है। आप मुझे बताइए भाइयो-बहनों, 2014 में आपने वोट दिया था भ्रष्टाचार के खिलाफ दिया था कि नहीं दिया था। आप मुझे बताइए, आपने ये काम करने के लिए मुझे कहा था कि नहीं कहा था, काले धन के खिलाफ काम करने के लिए आपने मुझे कहा था कि नहीं कहा था। आपने मुझे कहा था तो मुझे करना चाहिए कि नहीं करना चाहिए। आप मुझे बताइए कि आपने जब मुझे ये करने के लिए कहा था तो आपको भी पता था कि भई ये काम करूंगा तो थोड़ी तकलीफ होगी, पता था कि नहीं पता था। ऐसा तो नहीं था कि बस आपको ऐसे ही मुंह में बताशा आ जाएगा। सबको मालूम था। ये सरकार बनने के तुरंत बाद हमने एक सुप्रीम कोर्ट के सेवानिवृत्त न्यायमूर्ति के नेतृत्व में Special investigation team बनाई SIT. दुनिया में कहां-कहां ये कारोबार चल रहा है। इस पर ये टीम काम कर ही है और हर छह महीने वो सुप्रीम कोर्ट को रिपोर्ट कर रही है। ये काम पहले वाली सरकारें टालती रही थी, हमने किया। अपने यहां कहावत है, पुत्र के लक्षण पालने में। जब मेरी पहली कैबिनेट में पहले ही दिन ऐसा बड़ा कड़ा निर्णय करता हूँ तो पता नहीं था कि मैं आगे ये करने वाला हूँ जी। मैंने छुपाया था क्या, कुछ नहीं छुपाया मैंने। हर बार मैंने ये बात कही है और आज मैं आपको उसका ब्योरा दे रहा हूँ। देश मुझे सुन रहा है। मैंने देश को कभी अंधेरे में नहीं रखा है। मैंने देश को कभी गलतफहमी में नहीं रखा है, खुलकर के बात कही है और ईमानदारी से।

भाइयो-बहनों, दूसरा जरूरी काम था दुनिया के देशों के साथ पिछले 50-60 साल में ऐसे agreement हुए थे कि जिसके कारण हम ऐसे बंध गए थे कि हम कोई जानकारीयां ही नहीं प्राप्त कर पा रहे थे। हमारे लिए बहुत जरूरी था कि दुनिया के देशों से पुराने जो agreement है उनमें बदलाव करे। कुछ देशों के साथ agreement करे। अमेरिका जैसे देश को मैं समझाने में सफल हुआ कि आप हमारे साथ agreement कीजिए और आपके बैंकों में किसी हिन्दुस्तानी का पैसा है, आता है या जाता है, हमें तुरंत पता चलना चाहिए। ये काम मैंने दुनिया के कई देशों के साथ किया है, कुछ देशों के साथ अभी भी चल रही है। लेकिन विश्व में कहीं पर भी भारत की चोरी-लूट का पैसा गया है तो उसकी तुरंत जानकारी मिले इसका प्रबंध पुराजोर तरीके से हमने किया है।

हम जानते हैं, आपको भी पता है कि दिल्ली के किसी बाबू का ये गोवा में फ्लैट बना हुआ है, है न। गोवा के बिल्डरों से मेरी शिकायत नहीं है। उनका तो काम है मकान बेचना, लेकिन गोवा में जिसकी सात पीढ़ी में कोई गोवा रहता नहीं है वो पैदा हुआ कहीं और, काम कर रहा है दिल्ली में, बड़ा बाबू है, फ्लैट खरीदा गोवा में, किसके नाम। खुद के नाम खरीदते हैं क्या, औरों के नाम से खरीदते हैं कि नहीं खरीदते हैं ये लोग। हमने कानून बनाया जो भी बेनामी संपत्ति होगी, दूसरे के नाम पर संपत्ति होगी। हम कानूनन अब उस पर हमला बोलने वाले हैं। ये संपत्ति देश की है, ये संपत्ति देश के गरीब की है और मेरी सरकार सिर्फ और सिर्फ देश के गरीबों की मदद करना मेरा कर्तव्य मानती है और मैं उसको करके रहूंगा।

हमने देखा है कि घर में शादी हो, ब्याह हो, कुछ काम हो, ज्वैलरी खरीदते हैं। बीवी का जन्मदिन हो, ज्वैलरी खरीदते हैं और कभी सोना खरीदते हैं और ज्वैलर भी, कोई बात नहीं ले जाइए साहब, थैला भरकर के ले आइए और ले जाइए। न बिल देना, न लेना, न कुछ हिसाब रखना, कुछ नहीं साहब। चल रहा था कि नहीं चल रहा था सब कैश चलता था कि नहीं चलता था। ये कोई गरीब लोग करते थे क्या। ये बंद होना चाहिए कि नहीं होना चाहिए। हमने नियम बनाया कि दो लाख रुपए से ज्यादा अगर आप गहने खरीदते हैं, ज्वैलरी खरीदते हैं तो आपको अपना पैन नंबर देना पड़ेगा ही। इसका भी विरोध हुआ था।

आप हैरान होंगे कि आधे से ज्यादा पार्लियामेंट के मेम्बर मुझे ये कहने के लिए आए थे कि मोदी जी ये नियम मत लगाओ और कुछ लोगों ने तो मुझे लिखित में चिट्ठी लिखने की हिम्मत की है। जिस दिन मैं उसे पब्लिक में करूंगा शायद पता नहीं वो अपने इलाके में जा पाएंगे कि नहीं जा पाएंगे। अगर आपके पास पैसे हैं, आप सोना जवाहरात खरीदते हैं, हम इतना ही कहते हैं कि भई आपको जो इनकम टैक्स का पैन नंबर है वो लिखवा दीजिए। पता तो चले कौन लेता है, पैसा कहां से आता है, कहां जाता है। भाइयो-बहनों ये 70 साल की बीमारी है और मुझे 17 महीनों में मिटानी है।

भाइयो-बहनों, हमने एक और काम किया। पहले की सरकारों ने भी किया था। ये जो ज्वैलर्स हैं, जो कि ज्यादातर हमारे यहां सोना वगैरह की बात जरा, उन पर कोई एक्साइज ड्यूटी नहीं लगती थी। पहले सरकार ने लगाने की कोशिश की थी, बहुत कम लगाई थी लेकिन सारे ज्वैलर, ज्वैलरों की संख्या बहुत कम है, एक गांव में एक-आध दो ही होते हैं। बड़े शहर में 50-100 होते हैं। लेकिन उनकी ताकत बड़ी गजब है साहब, अच्छे-अच्छे MP उनकी जेब में होते हैं और ज्वैलरी पर जब एक्साइज लगाई तो मेरे ऊपर इतना दबाव आया, MP का दबाव, delegation, हमारे परिचित, साहब ये तो सब इनकम टैक्स वाले लूट लेंगे, तबाह कर देंगे, ऐसे-ऐसे बताते थे कि मैं भी डर गया कि यार मैं ये करूंगा पता नहीं क्या हो जाएगा। मैंने कहा, ऐसा करो भई दो कमेटी बनाते हैं, वार्ता करेंगे, चर्चा करेंगे। सरकार की तरफ से उनको, जिन पर उन को भरोसा था ऐसी एक्सपर्ट कमेटी बनाई। पहले वाली सरकारों को ये प्रयास वापस लेना पड़ा था। साहब मैं ईमानदारी से देश चलाना चाहता हूं। मैंने वापस नहीं लिया, मैंने ज्वैलरों को विश्वास दिलाया, कोई आपसे ज्यादाती नहीं करेगा और कोई इनकम टैक्स वाला आपसे ज्यादाती करता है तो आप मोबाइल फोन से उसकी रिकॉर्डिंग कर लीजिए मैं उसके खिलाफ काम करूंगा। ये कदम हमने उठाया। जिनको पता हो, ये सारा देखकर के समझ नहीं आता था कि मोदी क्या करेगा आगे। लेकिन आप अपनी दुनिया में इतने मस्त थे कि और पॉलिटिकल पार्टी की तरह ये भी आकर के चला जाएगा। मैं भाइयो और बहनों कुर्सी के लिए पैदा नहीं हुआ हूं। मेरे देशवासियों मैंने घर, परिवार, सब कुछ देश के लिए छोड़ा है।

हमने दूसरी तरफ ये भी जोर लगाया। अच्छा कुछ लोग होते हैं, मजबूरन कुछ गलत करना पड़ा हो। सब लोग बेईमान नहीं होते, सब लोग चोर भी नहीं होते हैं कि मजबूरन कुछ करना पड़ा हो, अगर उनको मौका मिले तो सही रास्ते पर आने को तैयार होते हैं। ये संख्या बहुत बड़ी होती है। हमने लोगों के सामने स्कीम रखी कि अगर आपके पास ऐसे बेईमानी के पैसे पड़े हैं तो आप ECS कानून के तहत जमा करा दीजिए, इतना दंड भर दीजिए, उसमें भी मैंने कोई माफी नहीं दी लेकिन व्यापारी लोग चीजों को समझने में बड़े होशियार होते हैं। उनको समझ में आ गया कि ये मोदी हैं, कुछ गड़बड़ करेगा। आपको जानकर के खुशी होगी कि आजादी के 70 साल में ऐसी योजनाएं कई बार आई पर पहली बार 67 हजार करोड़ रुपए दंड समेत लोगों ने आकर के जमा किए और दो साल में टोटल सर्वे के द्वारा, रेड के द्वारा, डिक्लेयरेशन के द्वारा सवा लाख करोड़ रुपए जो कहीं सामने नहीं था, वो सरकारी खजाने में जमा हुआ है भाइयो-बहनों। सवा लाख करोड़ का हिसाब आया है। ये दो साल में किए हुए काम का हिसाब मैं आज गोवा की धरती से पूरे देश को दे रहा हूं भाइयो-बहनों।

उसके बाद, हमें मालूम था मुझे क्या करना है। हमने जन-धन account खोले। जब मैं ये स्कीम लेकर के आया था तो मेरा कैसा मजाक हुआ था पार्लियामेंट में, भाषण कैसे हुए थे, आपको याद होगा। मुझे पता नहीं क्या-क्या कहा जाता था। उनको लग रहा था कि मोदी के बाल नोच लेंगे तो मोदी डर जाएगा। अरे मोदी को जिंदा जला दोगे तो भी मोदी डरता नहीं। हमने प्रारंभ में आकर एक काम किया, प्रधानमंत्री जन-धन योजना के द्वारा गरीब से गरीब का बैंक account खोलना। उस समय लोगों को समझ नहीं आया कि मोदी बैंक account क्यों खुलवा रहा है, अब लोगों को समझ आया कि ये बैंक account का क्या फायदा होने वाला है। करीब-करीब 20 करोड़ से ज्यादा लोगों के बैंक account खोले और हिन्दुस्तान में अमीर लोगों की जेब में भ्रांति-भ्रांति बैंकों के क्रेडिट और डेबिट कार्ड होते हैं। गरीब तो बेचारा सोच ही नहीं सकता था कि ऐसा भी कोई कार्ड होता है कि कार्ड से मिल जाता है कुछ, पता नहीं था उसको। भाइयो-बहनों, प्रधानमंत्री जन-धन योजना के लिए बैंक के खाते खुले हैं ऐसा नहीं है।

इस देश के 20 करोड़ लोगों को हमने रुपये कार्ड दिया है, डेबिट कार्ड दिया है और ये आज से एक साल पहले किया हुआ है। उस डेबिट से अगर उसके खाते में पैसे हैं तो वो बाजार से कोई भी चीज खरीद सकता है, उसकी व्यवस्था उसमें उपलब्ध है भाइयो-बहनों। लेकिन लोगों को लगा कि नहीं-नहीं जैसे हर पॉलिटिकल काम होता है वैसे ही कोई। पॉलिटिकल काम नहीं था, मैं धीरे-धीरे देश की आर्थिक तबीयत सुधारने के लिए अलग-अलग दवाईयां दे रहा था। धीरे-धीरे डोज बढ़ा रहा था।

अब भाइयो-बहनों, मेरे देश के गरीबों की अमीरी देखिए। मैंने तो उनको कहा था कि जीरो अमाउंट से आप खाता खोल सकते हैं, एक बार आपका बैंक में पैर आना चाहिए बस। ये आर्थिक व्यवस्था में कहीं आप भी होने चाहिए। लेकिन मेरे देश के गरीबों की अमीरी देखिए दोस्तों। ये जो अमीर लोग रात को सो नहीं पाते हैं न, गरीबों की अमीरी देखिए दोस्तों। मैंने तो

कहा था कि जीरो रकम से आप बैंक account खोल सकते हैं लेकिन मेरे देश के गरीबों ने बैंकों में जन-धन account में 45 हजार करोड़ रुपए जमा करवाए दोस्तों। ये देश के सामान्य मानविकी की ताकत को हम पहचाने। 20 करोड़ परिवारों को रूपे कार्ड दिया। फिर भी कुछ लोग मानते ही नहीं। उनको लगता था कि यार कोई राजनैतिक गोटी बैठा देंगे तो हो जाएगा मामला। हमने एक बहुत बड़ा सीक्रेट ऑपरेशन किया। मनोहर जी वाला तो मैं नहीं कर सकता। दस महीने से काम पर लगा रहा, एक छोटी विश्वस्त टोली बनाई क्योंकि इतने नए नोट छापना, पहुंचाना, बड़ा कठिन, चीजें छिपाना, secret रखना, वरना ये लोग ऐसे होते हैं साहब पता चल जाए तो अपना कर लेंगे।

और 08 तारीख रात 8 बजे देश का सितारा चमकाने के लिए एक नया कदम उठा दिया दोस्तों। मैंने उस रात को भी कहा था कि इस निर्णय से तकलीफ होगी, असुविधा होगी, कठिनाईयां होगी, ये मैंने पहले ही दिन कहा है लेकिन भाइयो-बहनों मैं आज देश के उन करोड़ों लोगों के सामने सिर झुकाता हूं कि सिनेमा के थियेटर पर लाइन लगाते हैं न वहां भी झगड़ा हो जाता है। मैं देख रहा हूं कि पिछले चार दिन से चारों ओर पैसों के लिए कतार में खड़े रहने की जगह नहीं है लेकिन हर एक के मुंह से एक ही आवाज आ रही कि ठीक है मुसीबत हो रही है, पैर दुख रहे हैं लेकिन देश का भला हो।

मैं आज सार्वजनिक रूप से बैंक के सभी कर्मचारियों का अभिनंदन करता हूं। एक साल में, मेरे शब्द लिखिए, एक साल में बैंक के मुलाजिम को जितना काम करना पड़ता है न, उससे ज्यादा काम वो पिछले एक हफ्ते से कर रहा है। मुझे खुशी हुई। मैंने सोशल मीडिया में देखा रिटायर्ड बैंक के कर्मचारी, किसी की उम्र 70 साल, किसी की 75 साल, वो बैंक में गए। उन्होंने कहा, साहब रिटायर्ड हो गए हैं लेकिन इस पवित्र काम में, हमें आता है अगर आप हमें बैठाकर के काम में लगाना चाहते हैं तो हम हमारी सेवा देने के लिए तैयार हैं। मैं उन रिटायर्ड बैंक के कर्मचारियों का भी आज अभिनंदन करना चाहता हूं जिन्होंने अपनी सेवाएं देने के लिए अपनी पुरानी ब्रांच में जाकर के मदद करने के लिए गुहार लगाई है। मैं उनका अभिनंदन करता हूं।

मैं उन नौजवानों का अभिनंदन करता हूं जो कतार के बाहर धूप में खड़े रहकर के अपने खर्च से लोगों को पानी पिला रहे हैं। senior citizen के बैठने के लिए कुर्सियां लेकर के दौड़ रहे हैं। चारों तरफ देश की युवा पीढ़ी खासकर के इस समय इस काम को सफल करने के लिए काम में लगी है। इस काम की सफलता का कारण 08 तारीख के 08 बजे का मोदी का निर्णय नहीं है। इस काम की सफलता का कारण सवा सौ करोड़ देशवासी, जिसमें कुछ लाख छोड़ दो, ये जी-जान से लगे हैं इसलिए ये योजना सफल होना सुनिश्चित है भाइयो-बहनों।

मैं दूसरी बात बताना चाहता हूं। मुझे बताइए हमारे देश में मतदाता सूची, सभी पॉलिटिकल पार्टियां मतदाता सूची बनाने में काम करती है कि नहीं करती है। सरकार के सभी लोग काम करते हैं कि नहीं करते हैं, सारे टीचर्स करते हैं कि नहीं करते हैं। उसके बावजूद भी जिस दिन पोलिंग होती है, शिकायत आती है कि नहीं आती है कि मेरा नाम निकल गया, हमारी सोसायटी का नाम निकल गया, मुझे वोट नहीं देने देते। मुसीबत आती है कि नहीं आती है। इतना सारा open होने के बाद भी तकलीफ आती है कि नहीं आती।

भाइयो-बहनों हमारे देश में चुनाव होता है, चुनाव में तो क्या करना होता, जाना-बटन दबाना-वापस आना, इतना ही करना है न, तो भी इस देश में करीब-करीब तीन महीने, 90 दिन तक चुनाव का काम चलता है और उसमें सारा पुलिस तंत्र, सीआरपीएफ, एसआरपी, बीएसएफ, गवर्नमेंट का हर मुलाजिम, पॉलिटिकल पार्टी के करोड़ों-करोड़ों कार्यकर्ता सब लोग 90 दिन तक दिन-रात मेहनत करते हैं तब जाकर के हमारे इतने बड़े देश का चुनाव संपन्न होता है। 90 दिन लग जाते हैं। भाइयो-बहनों, मैंने सिर्फ देश से 50 दिन मांगे हैं। 30 दिसंबर तक मुझे मौका दीजिए मेरे भाइयो-बहनों। अगर 30 दिसंबर के बाद कोई मेरी कमी रह जाए, कोई मेरी गलती निकल जाए, कोई मेरा गलत इरादा निकल जाए तो आप जिस चौराहे में मुझे खड़ा करेंगे, मैं खड़ा होकर के देश जो सजा करेगा वो सजा भुगतने के लिए तैयार हूं।

लेकिन मेरे देशवासी दुनिया आगे बढ़ रही है, भारत की ये बीमारी देश को तबाह कर रही है। 800 मिलियन 65 प्रतिशत 35 से कम उम्र वाले नौजवान उनका भविष्य दाव पर लगा है। इसलिए मेरे भाइयो-बहनों जिनको राजनीति करनी है वो करे, जिनका लुट चुका है वो रोते रहे, गंदे आरोप लगाते रहे लेकिन मेरे ईमानदार देशवासियों आइए मेरे साथ चलिए, सिर्फ 50 दिन। 30 दिसंबर के बाद मैं, आपने जैसा हिन्दुस्तान चाहा है वो देने का वादा करता हूं।

किसी को तकलीफ होती है, पीड़ा मुझे भी होती है। ये मेरे अहंकार का नहीं है। भाइयो-बहनों, मैंने बुराईयों को निकट से देखा है। देशवासियों की तकलीफ समझता हूं, उनकी मुसीबत समझता हूं लेकिन ये कष्ट सिर्फ 50 दिन के लिए है। 50 दिन के बाद हम सफाई में सफल हो गए और एक बार सफाई हो जाती है तो छोटा-मोटा मच्छर भी नहीं आता। मुझे विश्वास है।

मैंने ये लड़ाई ईमानदार लोगों के भरोसे शुरू की है और ईमानदार लोगों की ताकत पर मुझे विश्वास है, पूरा यकीन है, पूरा भरोसा है। आप कल्पना नहीं कर सकते कि कैसे-कैसे लोगों का पैसा डूब रहा है। मां गंगा को भी आश्चर्य हो रहा है। कल जो चवन्नी नहीं डालते थे आज वो नोट बहाने आ रहे हैं। वो गरीब विधवा मां मोदी को आशीर्वाद देती है कि बेटा कभी बेटा या बहू देखते नहीं थे कल आए थे कि ढाई लाख बैंक में जमा कराने हैं। उन गरीब विधवा मांओं के आशीर्वाद देश की सफलता के यज्ञ को आगे बढ़ाएंगे और आपने देखा कि कैसे-कैसे लोग, 2जी स्कैम, कोयला स्कैम, अरबो-खरबों, मालूम है न सब, आज चार हजार रुपए बदलने के लिए लाइन में खड़ा रहना पड़ता है जी।

अरे सवा सौ करोड़ देशवासियों का प्यार न होता, विश्वास न होता, सरकारें तो आती और चली जाती भाइयो-बहनों, ये देश आज अमर है, ये देश का भविष्य उज्ज्वल है। इस उज्ज्वल भविष्य के लिए कष्ट झेलना। मैं कभी-कभी हैरान हूँ। अभी कल मेरी एक पत्रकार बंधु से बात हुई। मैंने कहा, आप तो मुझे दिन-रात कहते हो कि मोदी जी बस युद्ध हो जाए। मैंने कहा फिर तकलीफ हो गई तो क्या करोगे। बिजली बंद हो जाएगी, चीजें आना बंद हो जाएंगी, रेलवे cancel हो जाएगी, रेलवे में फौज के लोग जाएंगे, आप नहीं जा पाओगे, तब क्या करोगे। बोले अच्छा, ऐसा होता है। कहना बड़ा सरल होता है भई, उपदेश देना सरल होता है, जब निर्णय करते हैं तब उसके साथ चलना सामान्य मानविकी को कोई तकलीफ नहीं होती।

मैं देशवासियों को एक और बात कहना चाहता हूँ। इन दिनों बहुत लोगों को ये भ्रष्टाचार और काले धन पर बोलने की हिम्मत नहीं है क्योंकि जो भी बोला है, पकड़ा जाता है, यार कुछ तो दाल में काला है। ये हर कोई हँसते हुए चेहरे से बोल रहा है कि नहीं, नहीं मोदी जी ने अच्छा किया। फिर किसी दोस्त को फोन करता है, यार कोई रास्ता है। फिर वो कहता है यार मोदी जी ने सारे रास्ते बंद कर दिए। इसलिए अफवाह फैलाते हैं। एक दिन अफवाह फैलाई कि नमक महंगा हो गया है। अब बताइए भई 500 के नोट और 1000 के नोट, कोई है जो 1000 के नोट लेकर नमक लेने जाता है। ये इसलिए किया जाता है क्योंकि उनका मालूम है कि उनका लूट रहा है। 70 साल से जमा किया हुआ। महंगे से महंगे ताले लगाए थे, कोई पस्ती लेने वाला नहीं है। भिखारी भी मना करता है, नहीं साहब 1000 का नोट नहीं चलेगा।

भाइयो-बहनों, ईमानदार को कोई तकलीफ नहीं है। कुछ लोग अपने नोट, कहते हैं, मुझे सच मालूम नहीं लेकिन चर्चा चल रही है। कहते हैं कि कोई साढ़े चार सौ में बेच रहा है, कोई 500 का नोट तीन सौ में दे रहा है। मैं देशवासियों को कहता हूँ कि आपके 500 रुपए में से एक नया पैसा कम करने की ताकत किसी की नहीं है। आपका 500 रुपए मतलब four hundred ninety nine and hundred paise पक्का। ऐसे किसी कारोबार में आप लिफ्ट मत होइए। कुछ बेइमान लोग अपने लोगों को कह देते हैं कि जाओ लाइन में खड़े हो जाओ। दो-दो हजार का करवा लो यार, थोड़ा बहुत बच जाएगा।

दूसरा भाइयो-बहनों, मेरा सबसे आग्रह है। हो सकता है आपको पता भी न हो शायद आपके चाचा, मामा, भाई, पिताजी जिनका स्वर्गवास हो गया हो कुछ करके गए हो। आपका कोई गुनाह न हो। बस आप बैंक में जमा कर दीजिए, जो भी दंड देना है दंड दीजिए, आप मुख्य धारा में आ जाइए। सबका भला है। एक बात और कहता हूँ। कुछ लोग अगर ये मानते हो कि आगे देखा जाएगा तो कम से कम वो मुझे पहचानते होंगे। देश आजाद हुआ तब से अब तक का आपका कच्चा-चिट्ठा मैं खोल दूंगा। जिनके पास ये बेईमानी का है वो मानकर चले कि कागज का टुकड़ा है ये, ज्यादा कोशिश न करे। वरना सरकारी में, इसके लिए अगर एक लाख नए लड़कों को नौकरी देनी पड़े तो दूंगा और उनको इसी काम में लगाऊंगा। लेकिन देश में ये सारा जो करोबार चल रहा है उसको बंद करना ही करना है और अब लोग मुझे समझ गए हैं। इतने दिन उनको समझ नहीं आया लेकिन जरा एक डोज ज्यादा आया तो समझ आया। लेकिन ये पूर्णविराम नहीं है। मैं खुलकर के कहता हूँ कि ये पूर्णविराम नहीं है। देश में भ्रष्टाचार, बेईमानी बंद करने के लिए मेरे दिमाग में और भी कई प्रोजेक्ट चल रहे हैं। ये आने वाले हैं। ये ईमानदार लोगों के लिए मैं कर रहा हूँ जी, देश के गरीब लोगों के लिए कर रहा हूँ। मेहनत करके जिन्दगी गुजार रहे हैं, उनको अपना घर मिले, उनके बच्चों को अच्छी शिक्षा मिले, उनके घर में बुजुर्गों को अच्छी दवाई मिले, इसके लिए मैं कर रहा हूँ।

मुझे गोवावासियों का आशीर्वाद चाहिए। आप खड़े होकर के, ताली बजाकर के मुझे आशीर्वाद दें। देश देखेगा, ईमानदार लोग, इस देश में ईमानदार लोगों की कमी नहीं है। आइए ईमानदारी के इस काम मेरा साथ दीजिए। शाबाश मेरे गोवा के भाइयो-बहनों, मैं आपका सिर झुकाकर नमन करता हूँ। ये सिर्फ गोवा नहीं, ये हिन्दुस्तान के हर ईमानदार की आवाज है।

भाइयो-बहनों, मैं जानता हूँ कि मैंने कैसी-कैसी ताकतों से लड़ाई मोड़ ली है। मैं जानता हूँ कि कैसे-कैसे लोग मेरे खिलाफ हो जाएंगे। मैं जानता हूँ। 70 साल का मैं उनका लूट रहा हूँ मुझे ज़िंदा नहीं छोड़ेंगे, मुझे बर्बाद करके रहेंगे, उनको जो करना है

करे। भाइयो-बहनों 50 दिन मेरी मदद करे। देश 50 दिन मेरी मदद करे। जोर से तालियों के साथ मेरी इस बात को स्वीकार कीजिए आप।

बहुत-बहुत धन्यवाद।

अतुल कुमार तिवारी/ हिमांशु सिंह/ मनीषा

पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय

22-दिसंबर-2016 17:16 IST

वाराणसी में 22 दिसम्बर, 2016 को विभिन्न परियोजनाओं के उद्घाटन और शिलान्यास अवसर पर प्रधानमंत्री का भाषण

मेरा सौभाग्य है कि आज मुझे काशी में अनेक विविध प्रकल्पों का शिलान्यास कहो, लोकार्पण कहो, प्रोत्साहन कहो, ये अवसर मिला है। आज एक दिन में ही करीब-करीब 2100 करोड़ रुपयों के भिन्न भिन्न प्रोजेक्ट काशी को मिल रहे हैं। आज विशेष रूप से आरोग्य की दृष्टि से गरीब से गरीब परिवार को अस्पताल में सही सारवार मिले उसके Health के लिए आधुनिक संसाधनों का उसे लाभ मिले। आज ESIC के अस्पताल का आधुनीकरण करना पहले जितनी क्षमता थी उसके करीब दोगुना से भी ज्यादा बढ़ाना, आधुनिकता के साथ गरीब से गरीब सामान्य मजदूरी करने वाला व्यक्ति कल कारखाने में जिंदगी गुजारने वाला व्यक्ति ऐसे लोगों को आरोग्य सेवाएं प्राप्त हो। इसलिये भारत सरकार ने इस पूरे प्रोजेक्ट को अपने हाथ में लेकर के यहां के गरीब, मजदूर की सुविधा बढ़ाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाया है। और मुझे विश्वास है ये जो व्यवस्था में बदलाव हो रहा है। विस्तार हो रहा। आधुनिक विज्ञान और टेक्नॉलॉजी के उसके साथ जोड़ने का प्रयास हो रहा है। वो इस क्षेत्र के आरोग्य के दृष्टि से एक नया नजराना बनेगा।

अभी मैं काशी विश्वविद्यालय में गया था। वहां एक कैंसर रीसर्च इंस्टिट्यूट का शिलान्यास किया। इस पूरे क्षेत्र में कैंसर की बीमारी है तो मुंबई जाना पड़ता है। और हम जानते हैं कि मुंबई के अंदर अस्पताल में इतनी देर के बाद नंबर लगता है। क्यों न मुंबई में जो कैंसर अस्पताल है। वैसा ही वैसी ही सुविधाओं वाला उत्तम से उत्तम सारवार करने वाला अस्पताल उत्तर प्रदेश में हो। खासकर के पूर्वी उत्तर प्रदेश में हो। जिसका लाभ पड़ोस में झारखंड और बिहार के लोगों को भी मिले। एक बहुत बड़ा प्रकल्प जिसका शिलान्यास आज मैंने काशी विश्वविद्यालय के कार्यक्रम में किया है। उस पूरे क्षेत्र को इससे बहुत बड़ा लाभ होने वाला है। हम ये जानते हैं कि आरोग्य के क्षेत्र में Public Private Partnership का Model भी उतना ही महत्व रखता है। Private अस्पताल भी इस क्षेत्र में बहुत बड़ी मात्रा में काम करते हैं। भारत के ही संतान श्रीमान सेट्टी जी है तो कर्नाटक के बस गए हैं गल्फ Countries में। लेकिन उन्होंने Health के क्षेत्र में आरोग्य के क्षेत्र में बहुत विस्तारपूर्व अपना काम किया हुआ है। अनेक स्थानों पर उनके अस्पताल चलते हैं। वे भी काशी से आकर्षित हो कर के अपना एक Private अस्पताल काशी में आरंभ करने जा रहे हैं। आज मुझे उसका भी शिलान्यास करने का अवसर मिला है। 500 बेड का इतना बड़ा अस्पताल काशी में बनना ये काशी को बहुत बड़ा नजराना है। गरीब बीमार लोगों के लिए 500 में से 200 बेड वो पूरी तरह गरीबों के लिए समर्पित होंगे। बाकि जो 300 बेड हैं। super speciality सेवाओं के लिए होंगे। तो एक प्रकार से गरीबों का भला करने वाली। और इस क्षेत्र में इतना बड़ा अस्पताल बनने के कारण हजारों नौजवानों को नए रोजगार की संभावनाएं पैदा होंगी। हेल्थ सैक्टर में काम करने वाली वीधा Develop होगी। Paramedical का स्टाफ हो, Nursing का स्टाफ हो, अस्पताल का रखरखाव हो। तो एक बहुत बड़ा इस Investment के कारण इस क्षेत्र को लाभ होने वाला है।

आज जिस प्रकल्प का मैंने शिलान्यास किया था। और वर्तमान में हमारी मंत्री महोदया स्मृति ईरानी जी बड़ा परीश्रम कर के बहुत बारीकी से इस प्रोजेक्ट को आगे बढ़ाने के लिए जी जान से लगी रहती हैं। और उनके इस निरंतर प्रयासों का परिणाम है। इतने कम समय में उसका फेस-1 का आज मुझे उद्घाटन करने का सौभाग्य मिला है। मैं स्मृति जी को और उनकी पूरी टीम को और इससे पहले इस विभाग के मंत्री थे गंगवार जी उन सबको हृदय से बहुत-बहुत अभिनन्दन करता हूँ कि जिस उत्तम प्रकार का काम हुआ है, जिस तेजी से काम हुआ है। आज निर्धारित समय में फर्स्ट फेस आज ये सिर्फ काशी के लोगों के लिए नहीं है। ये पूरे क्षेत्र के। इस प्रकार से काम करने वाले लोग इनको इसका लाभ मिलने वाला है। काशी एक यात्रा धाम है Tourist Destination भी है। वहां इस प्रकार की व्यवस्था। काशी की एक वैश्विक पहचान बनाने का एक बहुत बड़ा आधार बन सकता है। अब काशी में जो भी लोग आए उनको वहां ले जाना चाहिए। यहां के रिकशा वाले होंगे, यहां के टैक्सी वाले होंगे उनको भी पता होना चाहिए। वहां वो देख भी सकता है कि इस क्षेत्र के लोगों के हाथों में कैसा हुनर है। कैसी कैसी चीजें निर्माण करते हैं। और उसका एक ग्लोबल पहचान बने प्रोडक्ट की भी पहचान बने, प्रोसेस की भी पहचान बने। और भारत की इस महान विरासत काशी के लोगों ने कैसे संभाल कर के रखी है। इसका दुनिया को परिचय हो वैसा एक उत्तम काम ये ट्रेड सेन्टर, म्यूजियम जिसके कारण बना है। कल रात की कुछ तस्वीरें मुझे यहां के लोगों ने भेजी थीं। इतना अद्भुत नजारा लग रहा था। कि काशी की धरती पर ऐसा भी निर्माण कार्य हो सकता है और

इतने कम समय में हो सकता है। इस प्राचीन शहर के साथ इस आधुनिक इमारत प्राचीन कलाकारी के साथ आधुनिक पहचान। ऐसा एक शुभ योग के साथ आज टैक्टाइल की दुनिया जो काशी की विशेष पहचान है। हस्तकला जो काशी की विशेष पहचान है। उंगलियों के बल पर नजाकत के साथ एक पूरी नई चीज निर्माण करने का जो सामर्थ्य इस धरती में है इसे दुनिया भली भाँति देखेगी, पहचानेगी।

हमारे पास पुराने परम्परा के साधन रहे हैं उसमें बदलाव जरूरी होता है। Technological Intervention आवश्यक होता है Invention आवश्यक होता है। आज कुछ साधियों को मुझे हथकड़ा उसकी सहायता देने का अवसर मिला। अलग-अलग निर्माण कार्य में हथकड़ा का जो उपयोग होता है। उसमें से आधुनिक टैक्नालॉजी के कारण आधुनिक व्यवस्था के कारण उनकी सरलता भी बढ़ेगी, आमदनी भी बढ़ेगी। उन चीजों में उसमें बल देने का प्रयास किया है। पूरे देश में इस क्षेत्र में काम करने वालों को एक पहचान कार्ड देने का अभियान चला है। हमारे देश के पास इतना बड़ा सामर्थ्य है। लेकिन बिखरा पड़ा हुआ है। न कभी उसके रिकॉर्ड उपलब्ध होती है न कभी उसकी पहचान होती है। एक गमुशुदा हमारा सामर्थ्य। ये भी हमारे लिये कभी-कभी बहुत बड़ा नुकसान का कारण होता है। और जिसकी पहचान बन जाती है उसकी एक ब्रांड बन जाती है। तो उसकी Value अपने आप बढ़ जाती है। क्यों न भारत का गरीब से गरीब व्यक्ति जिसके पास कौशल्य है, हुनर है, काम करने का जज़्बा है उसकी एक अपनी पहचान हो उसकी एक Identity हो। वो स्वयं एक ब्रांड है। हमारे देश में ऐसा काम करने वाले कोटी कोटी जन स्वयं में अपने आप में एक ब्रांड है। ये ब्रांड दुनिया को अभी तक हम परिचित नहीं करवा पाए हैं। इस पहचान के माध्यम से उनके सामर्थ्य को जानना उनके सामर्थ्य को बल देना इसी क्षेत्र में विकास करना है तो तुरंत कर सकते हैं कि चलो भई ये पहचान में इतने लोग हैं। इनके लिए योजना बनाइए। उनके लिए अवसर दीजिये। एकदम से उस काम को बढ़ावा मिल सकता है। तो आधुनिक टैक्नालॉजी के द्वारा व्यक्तियों की पहचान करते हुए उनके सामर्थ्य को टटोलते हुए उसका ब्रांडिंग करते हुए। ये जो पहचान कार्ड देने की योजना है उस का भी मुझे आज अवसर मिला है। जो लोग कार्पेट बनाने वाले हैं, उनको आधुनिक नई लूम जिसके साथ कारण क्वालीटी प्रोडक्शन एक इंटरनेशनल लेवल का प्रोडक्शन जिसके कारण हमारी कालीन को एक्सपोर्ट करने की सुविधा बढ़ेगी। और उपयोग में हम बेस्ट में से भी बेस्ट बना सकते हैं इस प्रकार का लूम उपयोग करते हुए। और उत्तम से उत्तम चीजें बना कर के हम दुनिया को दे सकते हैं। उसको भी आज मुझे वितृत करने का अवसर मिला है।

यहां कुछ नौजवान जिनको मुझे खेल के किट देने का अवसर मिला है। वैसे तो ये पहलवानों की धरती है। लेकिन आवश्यक है कि खेल हमारे देश में नौजवानों के जीवन का हिस्सा बनना चाहिए। हमारे समाज जीवन का चरित्र बनना चाहिए। खेल है तभी तो हमारे यहां एक अलग सा वातावरण पैदा होता है। स्पोर्ट्समैन स्प्रिट सबको पसंद आता है। लेकिन बिना स्पोर्ट्स, स्पोर्ट्समैन स्प्रिट संभव नहीं होता है। और इसलिये खेल को बढ़ावा देना नौजवानों को अवसर देना और भारत के अंदर जो सामर्थ्य है और विविधता भरा एक ही खेल के साथ नहीं अनेक प्रकार के खेल हैं अनेक प्रकार के कौशल्य है उसको बढ़ाने की दिशा में हमलोग प्रयास कर रहे हैं। आज मुझे खुशी है कि आप सबके बीच ऐसे अनेक विविध प्रकल्प समर्पित करने का मुझे अवसर मिला है। मुझे विश्वास है कि जिस प्रकल्प का शिलान्यास हुआ है। वे प्रकल्प समय सीमा में और हो सके तो समय से पहले हम उसको पूर्ण करेंगे। और यहां की जनता जनार्दन की सेवा में उसको समर्पित करेंगे। मैं आप सबका बहुत बहुत आभारी हूँ।

धन्यवाद!

अमित कुमार/शौकत अली

पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय

24-दिसंबर-2016 22:40 IST

पुणे मेट्रो परियोजना (प्रथम चरण) के शिलान्यास समारोह पर प्रधानमंत्री के भाषण का मूल पाठ

मंचस्त सभी महानुभाव और विशाल संख्या में पधारे हुए सभी पुणे के भाइयों और बहनों।

हमारे देश में बहुत तेजी से urbanization हो रहा है। आप कितनी ही व्यवस्था करें लेकिन जिस गति से शहरीकरण हो रहा है। हमारे लिए बहुत अनिवार्य हो गया है कि हम दो दिशा में काम करें। गांव में हम उस प्रकार से कार्य विकसित करें। रोजगार के अवसर पैदा करें। Quality of life इसमें गुणात्मक परिवर्तन करें। जो सुविधा शहर में है। वो सुविधाएं गांव को मिलें। जो संभावनाएं शहर में है वो संभावनाएं गांव में भी हो। जो अवसर शहर को उपलब्ध है, वो अवसर गांव को भी उपलब्ध हो। तब जाकर के गांव से शहर की तरफ जोड़ोड़ है। उसमें हम कुछ कमी ला सकते हैं। दूसरी तरफ अगर हम टुकड़ों में सोचेंगे, अभी-अभी जीतकर के आए हैं। पांच साल में कैसे फिर से चुनाव जीतना इसी दायरे में अगर सोचेंगे, तो हम कभी भी शहरों के सामने जो चुनौतियां खड़ी हो रही हैं। उन चुनौतियों को कभी भी पार नहीं कर पाएंगे। और इसीलिये तत्कालिक राजनीतिक लाभ हो या न हो पच्चीस साल तीस साल के बाद हमारा शहर कैसा होगा। कितनी मात्रा में पानी की जरूरत होगी। कितने स्कूल लगेंगे कितने अस्पताल लगेंगे। ट्राफिक कितना बढ़ेगा उसकी क्या व्यवस्था होगी। इस लंबी सोच के साथ अगर हम शहर का विकास प्लानिंग करेंगे, तब जाकर के ये तेज़ गति से जो शहरीकरण हो रहा है। उस चुनौतियों को हम पार कर सकते हैं। दिल्ली में जो सरकार है उसने जिसे आपने जिम्मेवारी दी है। और इसलिये हमने हमारी कार्यशैली तत्कालीन लाभ के बजाय एक स्थायी परिवर्तन की ओर बल देने वाली बनाई है। हमने गांवों के लिये योजना बनाई है। RurbanMission। ये RurbanMission ऐसा है, जिसमें वो गांव जो धीरे-धीरे शहर बनते चले जा रहे हैं। देखते ही देखते जनसंख्या बढ़ रही है। बड़े शहरों के बीस पच्चीस किलोमीटर के रेडियस में है। हमने देश भर में सभी राज्यों को कहा कि ऐसे गांव छानिये निकालिये। और उन गांव को Rurban योजना के तहत विकसित करने का एक डीटेल काम चल रहा है। जिस RurbanMission का सीधा-साधा अर्थ है आत्मा गांव की हो सुविधा शहर की हो। गांव की आत्मा मरनी नहीं चाहिए। वो सुरक्षित रहनी चाहिए, पनपनी चाहिए, लेकिन गांव वालों को 18वीं शताब्दी में जीने के लिए मजबूर नहीं किया जा सकता है। और इसलिये हमने RurbanMission के तहत देश भर में सैकड़ों गांव उन पर फोकस किया है सुविधाएं बढ़ाने का प्रयास किया है। ताकि शहरों पर बोझ कम किया जा सके। दूसरी तरफ शहरों में बड़ा बदलाव लाने का काम और बदलाव की पहली आवश्यकता होती है, Infrastructure ज्यादातर हमारे देश में Infrastructure के प्रति उदासीनता रही है। अभी इतने से चल जाएगा तो अभी इतना सा ही रोड बनाओ। और बाद में जब रोड चौड़ा करना है तब लोगों ने Encroachment कर लिया होता है। और फिर कोर्ट कचहरी का मसला चलता है पच्चीस तीस साल तक कोई मेल ही नहीं बैठता है। हमने ऐसे ही चलाया। पानी का नल डालेंगे, जब तक पानी के नल डालने का पूरा हो जाएगा पाइपलाइन का तब तक वहां जनसंख्या इतनी बढ़ जाएगी की वो पाइपलाइन का साइज छोटी पड़ जाएगी। फिर प्रश्न आएगा की बड़ी पाइपलाइन कैसे डाले। यानी हम विकास के उस मॉडल को लेकर चलें हैं, जिसके कारण हम तत्कालीन लाभ वो तो अनुभव करते हैं। लेकिन ऐसी व्यवस्थाएं विकसित नहीं करते के आने वाले दिनों में कितना बोझ होने वाला है उसका भी हम सोल्यूशन निकाल लें।

हमारी कोशिश है आज पूरे देश में एक साथ पचास से ज्यादा शहरों में मेट्रो की दिशा में आगे बढ़ने का प्रयास है। आप कल्पना कर सकते हैं कितना बड़ा आर्थिक बोझ उठाने का हमने फैसला किया है। लेकिन अगर हम टुकड़ों में करते बातों को टाल देते तो एक तो प्रोजेक्ट महंगे हो जाते, उस शहर की समस्या बढ़ती जाती, और पैसे लगाने के बाद भी वो आवश्यकता की पूर्ति करे इस स्थिति में नहीं होते। और इसलिये हमारा दूसरा प्रयास है कि जो भी काम हम हाथ में लें उसको समय सीमा में पूरा करें। हो सके तो पच्चीस तीस साल के बाद की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर के प्लानिंग करने का प्रयास करें। आज वो शायद Economically viable हो या न हो लेकिन एक बार जब बात चल पड़ी, तो Economically viable होना भी दो चार साल में हम अनुभव करने लग जाएंगे। हम क्वालीटी ऑफ लाइफ में चैन लाना चाहते हैं।

आज पूरे देश में ढाई लाख पंचायत उनको ऑप्टिकल फाइबर नेटवर्क से जोड़ने का एक बहुत बड़ा काम चल रहा है। ये डिजिटल इंडिया ये सिर्फ शहरों के लिये नहीं है। सम्पूर्ण हिन्दुस्तान को जब तक हम आधुनिक व्यवस्था और विज्ञान के साथ नहीं जोड़ेंगे, तो हम देश को आगे नहीं बढ़ा सकते। एक जमाना था जब Infrastructure की चर्चा आती थी, तो रोड,

रेल, ज्यादा से ज्यादा एयरपोर्ट अब वक्त बदल चुका है। लोगों को हाईवे भी चाहिए, आईवे भी चाहिए। हाईवेज Information base हाईवे भी चाहिए, आईवे भी चाहिए। अगर आईवेज चाहिए तो ऑप्टिकल फाइबर हमें पूरे देश में खड़ा करना पड़ेगा। पहले पानी का नल लग रहा है। पानी का पाइपलाइन लग जाए तो खुश हो जाते हैं। आज लोगों का कहना है कि साहब हमारे यहां गैस की पाइपलाइन भी चाहिए वक्त बदल चुका है, तो बदले हुए वक्त में हमने विकास के अवधारणाओं को भी आधुनिक करना होगा। और तब जाकर के सामान्य मानवी को आने वाले दिनों में क्या जरूरत रहने वाली है। इसको हम परिपूर्ण कर सकते हैं। वर्तमान में सरकार infrastructure के दायरे को रेल और रोड से भी बढ़ाकर के Water grid, डिजिटल नेटवर्क, गैस ग्रीड, space के साथ सीधा संपर्क अगर हमारा किसान इंशोरेंस निकालता है, तो उसकी फसल कितनी थी उसकी फसल को कितना नुकसान हुआ। वो space technology से पता चलना चाहिए और किसान को उसके हक का पैसा मिलना चाहिए। इस प्रकार का नेटवर्क ये समय की मांग है। और उस रूप में भारत आधुनिक भारत बनें। व्यवस्थाओं और सुविधाओं से सवर हो उस सपने को लेकर के हम चल रहे हैं।

पुणे में मेट्रो का ये प्रकल्प यहां के लोगों की नाराजगी बहुत स्वाभाविक है। अगर यही काम बहुत पहले हुआ होता, कम खर्चे में हुआ होता। इतने साल तक जो परेशानी हुई। वो न होती कई लोगों ने मुसीबत के कारण गाड़ियां खरीदी वो गाड़ियां नहीं खरीदते वो मानलेते कि मेट्रो आ गया है गाड़ी खरीदने का खर्चा क्यों करें। पार्किंग के लिए जगह नहीं है। लेकिन देर आए दुरुस्त आए। और मेरे पुणे के भाई-बहनों पहली की सरकारें बहुत अच्छे - अच्छे काम मेरे लिये बाकी रख कर गई है। और इसलिये ये अच्छे काम करने का मुझे अवसर मिल रहा है। मुझे आज पुणे में इस कार्य हेतु आपके बीच आने का सौभाग्य मिला। मुझे मालूम नहीं है कि ये जगताप जी कितने खुश हैं। क्योंकि पोलिटिकल कारणों से कभी खुशी हो तो भी जाहिर करना जरा मुश्किल हो जाता है। अभी वेंकैया जी बता रहे थे कि पुणे को 28 करोड़ की बजाय 160 करोड़ मिल गया। अब चुनाव आने वाले हों, मुनसी पाल्टी के पास 160 करोड़ रुपया आ जाए क्या कुछ नहीं कर सकते वो। लेकिन ये सब हुआ इसलिये कि आठ नवम्बर को रात को आठ बजे जो मैंने घोषणा की इसके कारण हुआ है। और ये सिर्फ पुणे में नहीं हिन्दुस्तान की हर सरकारों के पास अकेले अरबन बोडीज़ में 200 से 300 प्रतिशत इनकम बढ़ी है। क्योंकि हर किसी को लगा कि मोदी ले जाएगा इससे अच्छा है यहां डाल दो। ये भी अच्छा हुआ वरना कभी अरबन बोडीज़ में टैक्स 50 प्रसेंट, 60 प्रसेंट, 70 प्रसेंट से आगे बढ़ नहीं पाता था। और देने वाले कौन थे। सामान्य व्यक्ति तो दे देता था और नहीं देने वाले कौन होते थे। जो कभी-कभी हमारे अगल-बगल में दिखाई देते थे वो भी नहीं होते थे। अब क्योंकि जिनकी ज्यादा पहुंच होती है। वो कानून नियम तोड़ने का आदि हो जाता है। लेकिन इन सबको लाइन में लगा दिया है। देश में हर कोई समान होता है जी। हर किसी को कानून का पालन करना चाहिए। हर किसी ने नियमों का पालन करना चाहिए। और मैं बताऊं देशवासियों हमारे देश में सरकारें कैसे चली हैं। ये मैं किसी की बुराई करने के लिये नहीं कह रहा हूं। दिल में दर्द होता है पीड़ा होती है। क्या कर के रख दिया हमारे देश को। आप हैरान होंगे भारत की संसद ने 1988 में बेनामी संपत्ति का कानून पास किया। संसद में बहस हुई पक्ष विपक्ष चर्चा हुई। कानून पास हुआ अखबारों में हैडलाइन छप गई। जिनको जय जयकार होना था जय जयकार हो गया मालाएं पहन लीं कि बड़ा ईमानदारी का काम किया। लेकिन संसद से वो जो कागज निकला वो फाइल के ढेर में खो गया। मेरे आने के बाद निकला। उसका नोटिफिकेशन नहीं हुआ। कानून लागू नहीं किया गया। अगर 1988 में उस समय जो संसद में बैठे थे। जिन्होंने इतना बड़ा महत्वपूर्ण निर्णय किया अगर उस सरकार ने लागू किया होता तो आज बेनामी संपत्ति के नाम पर जो देश में जो पाप बढ़ा है वो बढ़ता क्या। देश बचता कि नहीं बचता। ऐसा ऐसा पाप कर के गए हैं। अब आप मुझे बताइये मैं भी ऐसे ही चलने दूं कि ठीक करें। जरा जोर से बताओ ठीक करें। तो जैसे अभी देवेन्द्र जी ने आपसे लाइट करवाई थी न फिर से वैसे लाइट करके बताइए। ठीक करना चाहिए कि नहीं करना चाहिए। देश को तबाह होने की जो बातें चल रही है उसको रोकना चाहिए कि नहीं रोकनी चाहिए। और इसलिये भाइयों बहनों अगर समय पर देश में बीमारियों का उपचार किया होता तो आज मुझे ऐसे कठोर कदम नहीं उठाने पड़ते। आज से चालीस साल पहले जो काम करने चाहिए थे। वो काम किये होते तो आज मेरे देश के सवा सौ करोड़ ईमानदार लोगों को कतार में खड़ा नहीं रहना पड़ता। देशवासियों को जो लाइन में खड़े रहकर के कठिनाइयां झेलनी पड़ी हैं, जितनी पीड़ा देशवासियों को है उतनी ही पीड़ा मुझे भी है। लेकिन ये निर्णय देश के लिए करना पड़ रहा है। जिन लोगों ने निर्णय नहीं किया उन लोगों ने देश का भारी नुकसान किया है। मैंने देश को बचाने का वादा आपको किया था। और इसीलिये मैं आपके आशीर्वाद से आज ये कठोर कदम उठा रहा हूं।

भाइयों बहनों मैं पुणे से विशेष अपेक्षा करता हूं। ये देश की औद्योगिक विरासत वाली नगरी है। ये शिक्षा का भी धाम है। बहुत जमाने से अगर काशी में विद्वान होते थे, तो पुणे भी विद्वत्ता के लिये जाना जाता था। आईटी प्रोफेशन पुणे के जीवन के साथ जुड़ा हुआ है। क्या ये पुणे नगरी ऑनलाइन पेमेंट की दिशा में और तेज गति से बढ़ सकती है कि नहीं बढ़ सकती है। क्या हमारा मोबाइल फोन मोबाइल फोन बैंक बन सकता है कि नहीं बन सकता है। ये बैंक हमारी हथेली में हो सकती है कि नहीं हो सकती है। जब चाहे जी चाहे अपना कारोबार चला सकते हैं कि नहीं चला सकते हैं। क्या बैंक के कतार में खड़ा रहने की जरूरत है। क्या एटीएम के बाहर खड़े रहने की जरूरत है। सारी व्यवस्था उपलब्ध है कि नहीं है। क्या पुणे वासी मेरी मदद कर सकते हैं कि नहीं कर सकते। करोगे पक्का करोगे। हम तय करें कि हम e-wallet के द्वारा या डेबिट कार्ड के द्वारा अब तो आधार सर्विसिज भी एनेबल है। सिर्फ आपका आधार नंबर हो अकाउन्ट नंबर हो सिर्फ

अंगूठा लगाइये आपका पैमेंट हो जाता है। इतनी व्यवस्था हो गई है। और ये बात मान कर चलिये। यहां शरद राव बैठे हैं किसान नेता हैं। मुझे बताइये गन्ना की पैदावार ज्यादा हो तो गन्ने का दाम कम हो जाता है कि नहीं हो जाता है। बताइये ना प्याज की पैदावार ज्यादा हो तो प्याज का दाम कम होता है कि नहीं होता। आलू की पैदावार ज्यादा हो तो आलू का दाम कम होता है कि नहीं होता है। ऐसे ही नोट ज्यादा पैदा होता है तो नोट का दाम भी कम हो जाता है। ये जितनी ज्यादा नोटें छापीं नोट की कीमत खत्म हो गई। आप आठ नवम्बर के पहले सौ रुपये को कोई पूछता था। उसकी तरफ कोई देखता था घर में कोई बच्चा हजार पांच सौ सौ का तो हजार की तरफ जाता था सौ की तरफ नहीं मुड़ता था। कोई कीमत ही नहीं बची थी। आठ तारीख के बाद सौ रुपये की शान बढ़ गई की नहीं बढ़ गई। छोटी currency की ताकत बढ़ गई कि नहीं बढ़ गई। देशवासियों आठ नवम्बर के बात हिन्दुस्तान में भी बड़ों की नहीं छोटों की ताकत बढ़ गई है दोस्तों। छोटों की ताकत बढ़ गई है। और ये मेरी लड़ाई छोटों की ताकत बढ़ाने के लिए है। गरीबों को सामर्थ्य देने के लिये है।

लेकिन आपने देखा होगा। कुछ लोगों को लगा कि सब सरकारें तो ऐसी होती हैं। पहले थी वैसे ये होगी। ठीक है मोदी दो चार दिन बोल देंगे फिर क्या होगा। फिर तो हम ही हम हैं। सालों से करते आए हैं कर लेंगे। इसी मिजाज में उनको लगा बैंक में डाल दो सब काला सफेद हो जाएगा। नोट तो काले की सफेद नहीं हुई लेकिन चेहरा काला हो गया। चेहरा काला हो गया। कुछ बैंक वालों को पटा कर के और हिस्सेदारी कर के खेल खेलने गए अब कहीं मुंह दिखाने लायक नहीं रहे। आज टेक्नॉलॉजी इतनी उत्तम है कि वो घर से निकला है न वहां तक पहुंच पहुंचने वाली है। महीना दो महीना तीन महीने के बाद भी ये हरेक को पीछा किया जाएगा बताओ भाई। पहले तो नहीं था कहां से आया। बताना पड़ेगा। जिन्होंने सोचा है कि अब बैंक में गए अब काला सफेद हो गया उनसे मैं कहता हूं संभल जाइए। अभी भी मौका है कानून का पालन कीजिए। गरीबों के हक का जो है वो लौटा दीजिए। अब बचने की संभावना बची नहीं है। और इसलिए ये पुणे की धरती से मैं हर किसी को कहना चाहता हूं। अभी भी वक्त है आज भी नियम ऐसे हैं जिससे आपकी मदद हो सकती है। सही रास्ते पर आ जाइए जिंदगी भर चैन की नींद सो जाइए कोई चिंता का विषय नहीं रहेगा। और अगर नहीं आए तो मैं कम से कम सोने वाला नहीं हूं। भाइयों बहनों ये भ्रष्टाचार कालाधन जाली नोट ये आतंकवाद ये नक्सलवाद इसके खिलाफ लड़ाई कहने को नहीं कह रहा हूं दोस्तों बड़े जिगर के साथ लड़ाई को छेड़ा है। और सवा सौ करोड़ देशवासियों का मिजाज देखकर के मैं विश्वास से कहता हूं। ये मुट्ठी भर ताकतें जो देश को बान में रखकर अपनी जो चाहे मरजी करते थे। वो वक्त चला गया है। अभी देश में बातें चलेगी तो सवा सौ करोड़ देशवासियों की चलेगी। अगर इस देश में आवाज उठेगी तो देश के सवा सौ करोड़ देशवासियों की आवाज उठेगी। उस आवाज को मुट्ठी भर लोग अब दबा नहीं पाएंगे। इस बात को लेकर के मैं निकला हूं दोस्तों। और इसलिये मैं देशवासियों का आभारी हूं। और मैं बताऊं मैंने पहले दिन कहा था। पचास दिन तक तकलीफ होने ही वाली है। और मैंने तो यह भी कहा था बढ़ने वाली है। लेकिन पचास दिन के बाद ईमानदार लोगों की तकलीफ कम होना शुरू हो जाएगा और बेईमान लोगों की तकलीफ बढ़ना शुरू हो जाएगा। आप देखेंगे आपको पता चलेगा वैसे भी अभी देख रहे हो। बड़े बड़े बाबू जेल जा रहे हैं। बड़े बड़े लोग जेल जा रहे हैं। बैंकों के अनेक लोग घर चले गए। छुट्टी हो गई और कुछ जेल भी चले गए। भाइयों बहनों बड़ी सोच समझकर के देशवासियों के प्रति पूरा विश्वास रखते हुए जो कदम उठाए हैं देश सफल हो के रहेगा। ये मेरा विश्वास है। मेट्रो का काम तेज गति से आगे बढ़े और जब महाराष्ट्र का चुनाव चल रहा था तब मैंने महाराष्ट्र को कहा था मैं कहा देखिये 15 वर्ष से ये महाराष्ट्र की गाड़ी गड़दे में फंसी हुई है। अगर उसको निकालना है तो डबल इंजन की जरूरत पड़ेगी। एक दिल्ली का इंजन एक महाराष्ट्र सरकार का इंजन और आपने हम पर भरोसा किया। डबल इंजन लग गए हैं। मेट्रो की आई कि नहीं आई। तो ये डबल इंजन की ताकत है। तो आपने डबल इंजन का अवसर दिया तो इसके लिए भी आपका बहुत बहुत आभार धन्यवाद !

अभिषेक दयाल/शाहबाज हसीबी/शौकत अली

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

24-दिसंबर-2016 20:08 IST

मुंबई में विभिन्न विकास परियोजनाओं के समारोह के शिलान्यास पर प्रधानमंत्री के भाषण का मूल पाठ

मंच पर विराजमान सभी महानुभाव और विशाल संख्या में पधारे हुए मेरे प्यारे भाइयों और बहनों।

आप कल्पना कर सकते हैं कि आज मैं कितना आनन्दमय अनुभूति कर रहा हूँ, जब भारतीय जनता पार्टी ने 2014 के चुनाव के लिये मुझे जिम्मेवारी दी, तो मैं पहले रायगढ़ के किले पर आया। क्षत्रपतिजी की समाधी उसके सामने बैठकर के ये वीर प्राकर्मी महापुरुष, जिन्होंने सुशान और प्रशासन हिन्दुस्तान के इतिहास में एक नवीन अध्याय लिखा था और अपने योग्यता और क्षमता के आधार पर किया था। और संकटों के बीच किया था। संघर्षमय जीवन के रहते हुए किया था। शायद इतिहास में विश्व के इतिहास में ऐसा व्यक्तित्व असंभव है के जिसने लगातार संघर्ष के बीच में सुशासन की उद्धव परम्परा को मजबूत बनाया हो। आगे बढ़ाया हो। इतिहासकारों की नजरों से रंगकर्मियों की नजरों से जब भी हम क्षत्रपति शिवाजी महाराज को देखते हैं तो घोड़ा हो घोड़े पर शिवाजी महाराज हो हाथ में तलवार हो और उसके कारण हमारे मन में भी एक ही छवि बनी हुई है। क्षत्रपति शिवाजी महाराज का व्यक्तित्व बहुआयामी था। अगर हम भगवान रामचंद्रजी का मूल्यांकन सिर्फ रावण वध से करें, अगर हम श्रीकृष्ण का मूल्यांकन सिर्फ कंश को प्राजित किया उस प्रकार से करें। अगर महात्मा गांधी का मूल्यांकन सिर्फ अंग्रेजों को निकाला यहाँ तक करें तो शायद हम इन महापुरुषों का पूर्णरूप देखने में असफल हुए हैं। ये हमें स्वीकार करना होगा। प्रभु रामचंद्र जी रावण का वध उनके जीवन के अनेक पहलुओं में एक पहलु था। लेकिन बाकि इतने पहलु थे जो आज भी भारतीय जीवन को प्रभावित करते हैं प्रेरित करते हैं। श्रीकृष्ण के जीवन में भी सिर्फ कंश ही एक घटना नहीं थी। युद्ध के मैदान में गीता का संदेश कोई कल्पना कर सकता है कि ये देश की कैसी मिट्टी है कि जिस मिट्टी में ऐसे लोग जन्म लेते हैं कि जो युद्ध के मैदान में भी हजारों साल प्रेरणा देने वाले चिंतन की धारा को गीता के रूप में प्रस्तुत करते हैं। महात्मा गांधी ने आजादी के लिये लड़ते रहे अंग्रेजों को निकालने के लिए जूझते रहे। लेकिन साथ-साथ महात्मा गांधी समाज में बुराइयों के खिलाफ जो लड़ाई लड़ी। हर व्यक्ति के अंदर चेतना भरने का प्रयास किया। आत्मसम्मान जगाने का प्रयास किया। हम उसे कभी भी कम नहीं आंक सकते हैं। उसी प्रकार से क्षत्रपति शिवाजी महाराज यानी घोड़ा तलवार युद्ध लड़ाई विजय यहां तक सीमित नहीं है। वे प्राकर्मी थे वीर थे। पुरुषार्थी थे। हम सबकी प्रेरणा हैं। लेकिन साथ-साथ आप कल्पना तो कीजिये। जैसे राम जी ने छोटे-छोटे लोगों की सेना बनाई वानर सेना बनाई। और लड़ाई लड़ी और जीत ली। कितना बड़ा संगठन का कौशल्य था। क्षत्रपति शिवाजी महाराज ने भी छोटे-छोटे किसान मावड़े उनको सात लिया उनको प्रशिक्षित किया और युद्ध के लिये तैयार किया। कितने बड़े संगठन शास्त्र का कौशल्य क्षत्रपति शिवाजी महाराज ने प्रस्तुत किया।

आज भी हिन्दुस्तान के Engineering के Student के लिए अगर Water management क्या होती है Water के लिये Infrastructure क्या होता है। पानी के लिये तरस्ते इलाकों को पानी कैसे पहुंचाया जा सकता है। अगर उसका उत्तम से उत्तम ज्ञान प्राप्त करन है, जो क्षत्रपति शिवाजी महाराज ने पानी के लिए जो पूरी व्यवस्थाएं खड़ी की थीं। वो आज भी किसी को भी प्रेरणा दे सकती है। मुद्रानीति क्षत्रपति शिवाजी महाराज के सामने प्रस्ताव था कि मुद्रा का निर्माण सिक्के बनाने का काम वेदेशी लोग करने को तैयार थे। क्षत्रपति शिवाजी महाराज की दीर्घ दृष्टि थी। उन्होंने कहा अगर मुद्रा पर किसी का अधिकार हो गया तो शासन को प्राजित होने में देर नहीं लगती है। और उन्होंने खुद ने सिक्के बनाने के लिए व्यवस्था खड़ी की। लेकिन कभी विदेशों की व्यवस्था को स्वीकार नहीं किया।

आज पूरे विश्व में सामुद्रिक सुरक्षा एक बहुत बड़ा विषय बना हुआ है। सारी दुनिया सामुद्रिक सुरक्षा को लेकर के सजग हो गई है। हर किसी को अपने अधिकारों की रक्षा और अपने व्यापारिक संबंधों को विश्व भर में सुरक्षा मिले उसकी चिंता रहती है। लेकिन इतने सालों पहले इसी धरती पर एक वीर पुरुष पैदा हुए थे। जिन्होंने नेवी की स्थापना की थी। और सामुद्रिक सामर्थ को जिन्होंने पहचाना था। और हम सिंधु दुर्ग समते जितने भी किले देखते हैं उसमें उस नेवी के लिए आवश्यकताओं को बल दिया गया है। ये बात सही है दुनिया में जहां पर पुरातन जीवन व्यवस्थाएं हैं उन देशों में Tourism को आकर्षित करने के लिए Iconic चीजें एक बहुत बड़ा आकर्षण का कारण बनती हैं। आज भी दुनिया हिन्दुस्तान में Tourism की चर्चा आती है तो ताजमहल का नाम सुनते ही उसको लगता है कि मुझे जाना चाहिए। हर युग में इस प्रकार के Iconic Symbolic चीजों का जो निर्माण हुआ है। सदियों तक उस देश की वो पहचान बना हुआ है। दुनिया के कई देश हैं जहां

सिर्फ For Tourism किलों का प्रवासन इसके लिये अलग से व्यवस्थाएं हैं। भारत के पास भी हमारे राजा महाराजाओं के जमाने में ऐसे पूरे देश के हर कोने में अनेक किले बने हुए हैं। इसकी अपनी एक रचना है। सुरक्षा का विज्ञान है। Architecture है। उस समय किस प्रकार के संसाधनों का उपयोग होता था। उसकी भली भांति विशेषताएं हैं। लेकिन दुर्भाग्य से हम ताजमहल के बाहर निकल ही नहीं पाए। इस देश के हर कोने में विश्व को आकर्षित करने के लिए अनेक प्रवासन धाम हैं। अगर भारत का सही रूप में विश्व के सामने प्रस्तुतीकरण हो तो विश्व को भारत में Tourism के लिये आकर्षित करने की पूरी ताकत है। आज दुनिया में सबसे तेज गति से आगे बढ़ने वाला कोई क्षेत्र है तो Tourism है। Trillions of Trillion Dollar का व्यापार Tourism में है। भारत दुनिया के पुरान्तन परम्पराओं से जीने वाला देश विश्व को आकर्षित कर सकता है। क्षत्रपति शिवाजी महाराज ने जो किले बनाए अगर हम सही रख रखाव करें, विश्व के सामने उसकी पहचान कराएं। हिन्दुस्तान की यूनिवर्सिटीज़ को भी कहें कि आइए आपका Adventure tourism करना है इन किलों की जरा चढ़ाई कर के दिखाइए घोड़े पर जाना है किले पर जाइये घोड़े पर हम लेने कि व्यवस्था करते हैं। मैं भारत सरकार के ASI डिपार्टमेन्ट कहूंगा कि क्यूं न हम क्षत्रपति शिवाजी महाराज के किलों से शुरुआत करें। और देश भर में एक टीलों के Tourism का एक माहौल बनाएं। उसका रख रखाव जनसामान्य को आकर्षित करे ऐसा बनाएं। भाइयों बहनों आज मेरे लिये अत्यंत आनन्द का पल इसलिये है, और महाराष्ट्र सरकार का महाराष्ट्र की जनता का आभारी हूं कि मुझे आज जो शिव स्मारक बनने वाला है। उसमें जल पूजन का भूमि पूजन का सौभाग्य मिला है। ऐसा अवसर जीवन में धन्यता की अनुभूति कराता है। और मुझे विश्वास है कि जो संकल्पना महाराष्ट्र ने की है फडनवीस सरकार ने की है ये संकल्पना परिपूर्ण होकर रहेगी। और पूरा देश जब निर्माण कार्य पूरा होगा। तब गर्व की अनुभूति करेगा। और विश्व में सीना तान कर खड़ा होगा कि दुनिया का सबसे ऊंचा Iconic Building हमारे पास है। और उस महापुरुष का है जिसने जनसामान्य के सुख के लिए अपना पूरा जीवन खपा दिया था। ऐसे क्षत्रपति शिवाजी महाराज को आज नमन करने का मुझे अवसर मिला है।

भाइयों बहनों हमारे देश में भांति- भांति की राजनीति हुई है। विविधताओं से भरे हुए अनेक प्रकार के रास्ते अपनाए गए हैं। लेकिन अब 70 साल के अनुभव के बाद हमें इस बात को स्वीकार करना होगा अच्छा होता देश आजाद होने के बाद हमें एक मात्र विकास का मार्ग अपनाया होता तो आज भारत में जो समस्याएं जड़े जमा चुकी हैं ऐसी समस्याएं कभी जड़ें जमा नहीं सकती थीं।

विकास यही एक मात्र समस्याओं का समाधान है। देश के नौजवानों को रोजगार देने की संभावना विकास में है। देश के गरीबों को हक दिलाने की ताकत विकास में है। मध्यमवर्गीय लोगों को अपने अरमान पूरे करने के लिये ऊंची दौड़ के लिए आगे बढ़ना है, तो विकास ही उसको अवसर दे सकता है। सम्मान से जीने के लिए विकास ही एक मार्ग होता है। और इसलिये भाइयों बहनों जबसे आपने हमें दायित्व दिया है हमने विकास को ही केन्द्र बिन्दु में रखा है। और जब हमने विकास को ही केन्द्र बिन्दु में रखा है तब हमारे मन में साफ है कि विकास वो हो जो Sustainable हो। विकास वो हो जो गरीबों को अपनी जिन्दगी में बदलाव लाने का मौका देता हो। अपने आशा अरमान पूरा करने का बल देता हो ताकत देता हो, Empowerment देता हो। और इसलिये हमारी सारी योजनाओं के केन्द्र बिन्दु में गरीब का कल्याण है। जब हमारी सरकार बनी, तो हमारे सामने एक रिपोर्ट आया। छोटे-छोटे कारखानों में जो लोग निर्मुक्त होते थे। सरकारी कामों से जिनको पेंशन मिलता था। मैं हैरान हो गया। कुछ लोगों को 7 रुपये पेंशन मिलता था। कुछ लोगों को 51 रुपये पेंशन मिलता था। कुछ लोगों को 80 रुपये पेंशन मिलता था। सौ डेढ़ सौ से आसपास कोई नहीं था। अब पेंशन लेने वाला भी सात रुपया लेने के लिए ऑटो रिक्शा करके 80 साल का व्यक्ति पोस्ट ऑफिस क्यूं जाएगा। हमने आते ही निर्णय किया। कि जो निवर्तमान लोग हैं जिनको इतना कम पेंशन मिलता है। सरकारी खजाने पर बोझ तो लगेगा। लेकिन उनको कम से कम 1000 रुपया मिले इसकी व्यवस्था होनी चाहिए। और भाइयों बहनों 35 लाख से ज्यादा लोग ये छोटा आंक नहीं है सैकड़ों करोड़ों का बोझ सरकार के खजाने पर लगा और उसके बावजूद भी हमारी सरकार ने इन बुजुर्गों को अच्छी जिन्दगी जीने के लिये एक अहम कदम उठाया। दवाइयां मंहगी हो रही हैं। हमने निश्चित रूप से Generic Medicine पर बल दिया। जन औषाधालय खोलने का पूरे देश के अंदर ये बीड़ा उठाया ताकि गरीब को सस्ते में दवाई मिले। और सही मिले अच्छी मिले समय पर मिले ताकि गरीब का कोई दवाई के नाम पर शोषण न मिले गरीब मां लकड़ी के चूल्हे में चूल्हा जलाकर के खाना पकाती थी। उस गरीब मां के शरीर में एक दिन में चार सौ सिगरेट का धुंआ जाता था। वो गरीब मां बीमार नहीं होगी तो क्या होगा उस गरीब मां का बच्चा बीमार नहीं होगा तो क्या होगा। सरकार ने निर्णय किया कि गरीबी की रेखा के नीचे जीने वाले झुग्गी झोपड़ी में जिन्दगी गुजारने वाले इन गरीब परिवारों को ये लकड़ी के चूल्हे के धुंएं से मुक्त कराना है। और हमने बीड़ा उठाया करोड़ों करोड़ों गरीब परिवारों को गैस सिलेंडर का Connection देने का बीड़ा उठाया है। करोड़ों की तादात में लोगों को मिल चुका है। और आने वाले तीन साल में गरीबी की रेखा के नीचे जीने वाले दिनों में पांच करोड़ परिवारों तक पहुंचने का काम हमने उठाया है। इस देश में आजादी इन 70 साल हो गए। 18 हजार गांव ऐसे थे जो 18वीं शताब्दि में जीने के लिए मजबूर थे। बिजली का खंबा तक नहीं लगा था। न तार पहुंचा था न बिजली देखी थी। क्या इतिहास कि 70 साल जिन्होंने बर्बाद किये उनको माफ करेगा क्या। कि उन्होंने आजाद हिन्दुस्तान में 70 साल तक इन गांव वालों को 18 शताब्दि में जीने के लिये मजबूर कर दिया था। उन्होंने उजाला नहीं देखा था। अंधेरी जिंदगी में गुजारा करते थे। हमने एक हजार दिन में 18 हजार गांवों में बिजली पहुंचाने का बीड़ा उठाया है। आधे से

अधिक गांवों को पूरा कर दिया है। और गांवों का काम तेजी से चल रहा है। और 1000 दिन में इस काम को परिपूर्ण करके रहना है।

भाइयों बहनों कौन कहता है देश बदल नहीं सकता है। मैं विश्वास से कहता हूं सवा सौ करोड़ देशवासियों की ताकत के भरोसे कहता हूं देश बदल सकता है दोस्तों और लिखकर रखिए देश बदलेगा भी। देश बढ़ेगा भी। देश दुनिया के सामने सर उंचा करके खड़ा हो जाएगा। ये तीन साल के अनुभव के आधार पर कह सकता हूं। आप कल्पना कर सकते हैं आज इसी मंच पर जिन प्रकल्पों को लेकर शुभारंभ हुआ है। उन प्रकल्पों का अगर रुपये पैसे में जोड़ें तो कितना बड़ा हो रहा है। इसी एक मंच पर से ये जितने जितने बटन मुझसे दबवा रहे थे ना एक लाख छह हजार करोड़ रुपयों के प्रोजेक्ट हैं एक लाख छह हजार कोरड़। अकेले मुंबई में एक ही कार्यक्रम में एक लाख छह हजार करोड़ रुपयों से ज्यादा विकास के कामों का शुभारंभ होता हो। ये शायद मुंबई के इतिहास की बहुत बड़ी घटना होगी। और ये हम करके दिखाते हैं।

भाइयों बहनों मैं जब आज मुंबई की धरती पर आया हूं। तो मैं पूरे महाराष्ट्र की जनता का सर झुकाकर के अभिनन्दन करना चाहता हूं प्रणाम करना चाहता हूं। हमारे देश में अच्छा कहो या बुरा कहो लेकिन एक आदत सी बन गई है। कि आप कुछ अच्छा कर रहे हैं इसका सबूत क्या अगर चुनाव जीतते हैं तो सबूत है कि आप अच्छा कर रहे हैं। अगर आप हार गये तो माना जाता है कि आपका निर्णय गलत था। जब हमने भ्रष्टाचार और काले धन के खिलाफ जिस दिन से सरकार बनी है लड़ाई शुरू की है। एक के बाद एक कदम उठाए हैं। लेकिन आठ नवम्बर को रात को आठ बजे हमने बहुत बड़ा हमला बोल दिया। जाली नोट काला धन भ्रष्टाचार इसके खिलाफ एक निर्णायक लड़ाई का बिगुल बजा दिया। और भाइयों बहनों सवा सौ करोड़ देशवासियों ने इतने कष्ट झोले इतनी तकलीफ झेली लेकिन एक पल के लिए मेरा साथ नहीं छोड़ा। उनको भ्रमित करने के प्रयास हुए। उनको डराने के प्रयास हुए अफवाहों का बाजार गरम किया गया। लेकिन जिसको हम अनपढ़ कहते हैं अशिक्षित कहते हैं उसकी Common Sense ने इस बातों में बहकावे में आए बिना देश की भलाई के निर्णय का साथ दिया। और जब पिछले चुनावों में महाराष्ट्र के लोगों ने इस निर्णय पर मोहर लगा ली। तो पूरे हिन्दुस्तान में Massage चला गया कि सत्य किसके साथ है। और देश किस दिशा में जाना चाहता है।

भाइयों बहनों मैंने गोवा में कहा था कि ये लड़ाई सामान्य नहीं है। 70 - 70 साल तक जिन्होंने मलाई खाई है। ऐसे तगड़े तगड़े लोग इसको सफल न हो इसके लिये सब कुछ करेंगे। हर तरकीब अपनाएंगे। पूरी ताकत लगा देंगे। और किसी ने भी ताकत लगाने में कसर नहीं छोड़ी है। जिससे जो हुआ वो सब करने की कोशिश की है। लेकिन सवा सौ करोड़ देशवासियों के संकल्प के सामने ये 70 साल से मलाई खाने वाले लोग कभी टिक नहीं सकते जीत नहीं सकते। और देश देश कभी हार नहीं सकता है दोस्तों। सवा सौ करोड़ का देश कभी पराजित नहीं हो सकता है। ऐसे मुट्ठी भर लोगों से देश कभी झुक नहीं सकता है। कुछ लोगों को लगता था कि बैंक वालों को पटा लो सब काला सफेद हो जाएगा। अरे काले गोरे के खेल वाले आप तो मरे वो बैंक वालों को भी मरवा दिया। कैसे कैसे लोग जाल में फंस रहे हैं। एक के बाद एक परत खुलती चली जा रही है। उनको लगता था कि बैंक में चले गए तो हो गया काम अरे बैंक में आने के बाद ही तो काम शुरू हुआ है। मेरे देशवासियों मैं देशवासियों को कहना चाहता हूं। मैंने कहा था। पचास दिन तक तकलीफ होती रहेगी। और देशवासियों ने देश के भविष्य के लिये इन तकलीफों को झेला है। आगे भी जितने दिन बाकी हैं जो भी तकलीफ आएगी। देश झेलने के लिये तैयार है। ये मेरा पूरा विश्वास है। और भाइयों बहनों पचास दिन के बाद ईमानदार लोगों की तकलीफ कम होना शुरू होगा। पचास दिन के बाद ईमानदार लोगों की तकलीफ कम होना शुरू होगा। और बेईमानों की तकलीफ बढ़ना शुरू होगा। अभी भी मैं बेईमानी करने वालों को कहना चाहता हूं। संभल जाइए लौट आइए देश के कानून को स्वीकार कीजिए नियमों को मानिये और हर नागरिक की तरह आप भी सुखचैन की जिंदगी जीने के लिए आइए। मैं आपको निमंत्रण देता हूं। ये सरकार आपको तबाह करने पर तुली नहीं है। ये सरकार आपको फांसी पर लटकाने के लिये तुली नहीं है। लेकिन गरीबों के जो हक का है वो तो आपको चुकाना ही पड़ेगा। आपको बख्सा नहीं जाएगा। अगर कोई मानता है कि पहले की तरह कोई रास्ता खोजकर के निकल जाएगा तो आपने गलत सोचा है। आपको पता होना चाहिए सरकार बदल चुकी है। आपको पता होना चाहिए तीस साल के बात हिन्दुस्तान की जनता ने पूर्ण बहुमत वाली सरकार बनाई है। आपको पता होना चाहिए हिन्दुस्तान की जनता ने भ्रष्टाचार और काले धन को खत्म करने के लिए सरकार बनाई है और वो काम ये सरकार कर के रहेगी। और इसलिये भाइयों बहनों अब जो समय आ रहा वो बेईमानों की बर्बादी का वक्त प्रारंभ हो रहा है। देश की भलाई के लिए ये स्वच्छता का अभियान है। देश की भलाई के लिए साफ सुथरा सार्वजनिक जीवन हो। साफ सुथरा प्रशासन हो। विश्वास का वातावरण हो देश की हर निर्णयों की कीमत होनी चाहिए। उसका सम्मान होना चाहिए। भाइयों बहनों इस प्रकार का पाप करने की आदत मुट्ठी भर लोगों को है। लेकिन उसके कारण देश के कोटी कोटी लोगों को सहन करना पड़ता है। भाइयों बहनों अगर उनको मोदी का डर न लगता हो बेईमानों को तो न लगे, सरकार का डर नहीं लगता है, न लगे। लेकिन बेईमान लोगो इन सवा सौ करोड़ देशवासियों के मिजाज को कम मत आंकीये। उससे तो आपको डरना ही पड़ेगा। सवा सौ करोड़ देशवासियों का मिजाज बदला है। वे अन्याय सहने को तैयार नहीं हैं। बेईमानी सहने को तैयार नहीं भ्रष्टाचार स्वीकारने को तैयार नहीं हैं। काले धन के खिलाफ लड़ाई लड़ने के लिए वो सेनापति बनकर निकले हुए हैं। और इसलिए भाइयों बहनों लड़ाई जीतने के लिए आप लोगों ने जो मुझे साथ और सहयोग दिया है। मैं आज इस मुंबई

की धरती से महाराष्ट्र की धरती से क्षत्रपति शिवाजी महाराज के शिव स्मारक पर उसका शुभारंभ हो रहा है उस पल पर देशवासियों को विश्वास दिलाना चाहता हूं ये लड़ाई तब तक नहीं रुकेगी जब तक की हम लड़ाई जीतेंगे नहीं।

मैं फिर एक बार महाराष्ट्र सरकार का इस विकास के कामों में सहभागिता के लिए फडनवीस जी के नेतृत्व में एक दीर्घ दृष्टा महाराष्ट्र को सरकार मिली है विकास को समर्पित सरकार मिली है। चाहे किसानों के लिए पानी की प्रबंध की चर्चा हो, चाहे शहरों में Infrastructure की बात हो, चाहे नौजवानों के लिए skill development की बात हो, शिक्षा का क्षेत्र हो। हर प्रकार से महाराष्ट्र नई ऊंचाइयों को पार करने के लिये ताकत के साथ आगे बढ़ रहा है। मैं फडनवीस जी को उनकी पूरी टीम को हृदय से बहुत बहुत अभिनन्दन करता हूं। मेरे साथ बोलेंगे क्षत्रपति शिवाजी महाराज की, क्षत्रपति शिवाजी महाराज की, क्षत्रपति शिवाजी महाराज की, क्षत्रपति शिवाजी महाराज की, क्षत्रपति शिवाजी महाराज की, क्षत्रपति शिवाजी महाराज की, क्षत्रपति शिवाजी महाराज की, क्षत्रपति शिवाजी महाराज की, क्षत्रपति शिवाजी महाराज की, क्षत्रपति शिवाजी महाराज की बहुत बहुत धन्यवाद !

अभिषेक दयाल/शाहबाज हसीबी/शौकत अली